नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा

नवम्बर, 2019

वर्ष - 18

अंक-19

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रतियाँ – 1500

प्रकाशक
उत्तराखण्ड महिला परिषद्
द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि
पर्यावरण शिक्षा संस्थान,
अल्मोड़ा– 263601

प्रकाशन सहयोग
राजेश्वर सुशीला दयाल
चैरीटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली

सभी फोटो : अनुराधा पाण्डे

परिकल्पना एवं सम्पादन
अनुराधा पाण्डे

विशेष आभार
पद्मश्री डा0 ललित पांडे,
उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े
सभी महिला संगठन एवं संस्थाएं

सहयोग
डी. एस. लटवाल, सुरेश विष्ट
रमा जोशी, कमल जोशी,
कैलाश पपनै, जीवन चन्द्र जोशी

टंकण
धरम सिंह लटवाल

मुद्रक– सत्य शान्ति प्रेस, अल्मोड़ा

उत्तराखंड महिला परिषद् सहयोगी संस्थाएं

जनपद	संस्थाएं
अल्मोड़ा	'सीड', सुनाड़ी, द्वाराहाट पर्यावरण चेतना मंच, मैचून राइज, सेराघाट उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति, दन्या
बागेश्वर	पर्यावरण एवं शिक्षा समिति, शामा ग्रामीण उत्थान समिति, कपकोट
पिथौरागढ़	शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति, गणाई–गंगोली मानव विकास समिति, पव्वाधार उत्तरापथ सेवा संस्थान, मुवानी
चम्पावत	पर्यावरण संरक्षण समिति, पाटी
नैनीताल	जनमैत्री संगठन, गल्ला
चमोली	नवज्योति महिला कल्याण संस्थान गोपेश्वर 'शेप' बधाणी, कर्णप्रयाग 'जनदेश' सलना, जोशीमठ लोक जागृति विकास संस्था, कर्णप्रयाग लोक कल्याण विकास समिति, सगर
रूद्रप्रयाग	हिमालयन ग्रामीण विकास संस्थान, ऊखीमठ
पौड़ी गढ़वाल	नयारघाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाडियूं नीलकंठ सेवा संस्थान, मलेलगाँव
टिहरी गढ़वाल	घनश्याम स्मृति शिक्षा एवं कल्याण संस्थान

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नही है।

नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा
नवम्बर, 2019

वर्ष - 18

अंक-19
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

इस अंक में

क्र.सं.		विवरण	पृष्ठ संख्या
	हमारी बातें	अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा	1–4
1	मेरा गाँव भन्याणी	उमा बोरा, ग्राम भन्याणी गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	5–6
2	यू छ मेरू गढ़वाल	सुमन कुंवर, ग्राम ग्वाड़, जिला चमोली	7
3	पहाड़ों को रीति रिवाज	कुन्ती बर्त्वाल, ग्राम कांडई, जिला चमोली	8
4	गाँव में आजीविका संवर्धन	महेश गलिया एवं बची सिंह बिष्ट ग्राम गल्ला, जिला नैनीताल	9–11
5	जल संरक्षण और आजीविका संवर्धन	शिव नारायाण किमोठी, ग्राम बधाणी जिला चमोली	12–14
	ग्राम परितंत्र की जाँच	शिव नारायण किमोठी, ग्राम बधाणी जिला चमोली	15
6	जलवायु परिवर्तन एवं आजीविका	महानंद बिष्ट, गोपेश्वर, जिला चमोली	16–19
	ग्राम परितंत्र की जाँच	महानंद बिष्ट, गोपेश्वर, जिला चमोली	20–21
7	ग्राम वन	कैलाश पुष्पवाण, ग्राम किमाणा जिला रूद्रप्रयाग	22–23
8	दारू नी पेण	इन्दु डिमरी, ग्राम देवलधार, जिला चमोली	24
9	मानव और वन्य–जीव संघर्ष	बची सिंह बिष्ट, ग्राम गल्ला, जिला नैनीताल	25–29
10	क्षेत्रीय महिला सम्मेलन पाटी	पीताम्बर गहतोड़ी, पाटी, जिला चम्पावत	30–31
11	मेरो रातिर	सावित्री आर्या, ग्राम मल्खा डुगर्चा जिला बागेश्वर	32–33

12	महिला संगठन पाटा	राजेश्वरी नयाल, ग्राम पाटा जिला नैनीताल	34
13	मैं किसान	हेमा पाल सिंह, ग्राम किमाणा जिला रूद्रप्रयाग	35
14	रिंगाल हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला	लक्ष्मी पुष्पवाण, ऊखीमठ, जिला रूद्रप्रयाग	36
15	भूमि पर आधारित आजीविका के काम	पीताम्बर गहतोड़ी, पाटी, जिला चम्पावत	37–39
16	किराएदार या बकाएदार	कैलाश पपनै, अल्मोड़ा	40–42
17	घुघुति त्यार	केदार सिंह कोरंगा, ग्राम शामा जिला बागेश्वर	43–44
18	फूल–फल प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना	राकेश राणा, ग्राम बंगराली जिला रूद्रप्रयाग	45
19	पौधशाला निर्माण	दिगपाल सिंह, ग्राम किमाणा जिला रूद्रप्रयाग	46
20	आफरों का गाँव लधौन	अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा	47–49

हमारी बातें

इस वर्ष उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा से जुड़ी हुई संस्थाओं ने महिला संगठनों के साथ मिलकर पानी के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए उल्लेखनीय काम किये। साथ ही, ग्रामवासियों की आजीविका को बढ़ाने के लिए नये–नये प्रयोग और प्रयास हुए। पाँच पहाड़ी जिलों में ग्राम समूहों के चार सौ छत्तीस मवासों में किये गये सर्वेक्षण से उपजे निष्कर्ष इन प्रयासों का आधार बने।

पिछले कुछ वर्षों में महिला संगठनों एवं किशोरी संगठनों के साथ होने वाली चर्चाओं से लगातार यह महसूस हो रहा था कि प्रौढ़ एवं नयी पीढ़ी की स्त्रियों के विचारों, आशा–आकांक्षाओं में बड़ा अंतर हो गया है। इस अंतर को अनुभवों के साथ–साथ आंकड़ों की मदद से समझना जरूरी था। सर्वेक्षण में परिवारों के अन्य सदस्यों, खासकर महिलाओं के साथ–साथ बारह से बीस वर्ष की उम्र वाली किशोरियों से बातचीत की। सर्वेक्षण का एक मकसद कृषि एवं अन्य ग्रामीण आजीविकाओं के स्वरूप एवं वर्तमान समय में खेती की प्रासंगिकता को समझना था। चार सौ छत्तीस मवासों से कुल एक सौ तिहत्तर किशोरियों ने सर्वेक्षण में हिस्सा लिया और गहन बातचीत की।

सर्वेक्षण का कार्य स्थानीय संस्थाओं ने बधाणी–कर्णप्रयाग, गोपेश्वर–चमोली, ऊखीमठ–रूद्रप्रयाग, दन्या–अल्मोड़ा, पाटी–चम्पावत और गल्ला, रामगढ़–नैनीताल क्षेत्रों में अलग–अलग ग्राम समूहों में किया। भिन्न जिलों में स्थित ये ग्राम समूह ऊँचाई, जनसंख्या, जाति, आजीविका के साधन (कृषि, बागवानी, डेयरी आदि) एवं सड़क से दूरी इत्यादि कारकों में एक–दूसरे से भिन्न है। कहीं पलायन ज्यादा है तो कहीं कम। गल्ला, ऊखीमठ क्षेत्र के महिला संगठन अपेक्षाकृत कम समय से उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हैं जबकि दन्या, गोपेश्वर, पाटी और बधाणी क्षेत्रों में महिला संगठनों का जुड़ाव लगभग तीन दशकों से रहा है।

गाँवों में आजीविका की बात करते ही जंगली जानवरों से फसलों को हो रहे नुकसान का मुद्दा उभर आया। बंदर, सुअर, लंगूर, साही, काकड़ आदि जानवर लगातार फसलों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। महिलाएं खेतों में काम करें तो भी उसका फायदा नहीं मिल रहा। दिन में बंदरों का आतंक तो रात को सुअरों के समूह खेती उजाड़ रहे हैं। असमय होने वाली बारिश भी फसलों पर असर कर रही है। कभी सूखा तो कभी बारिश का तीव्र वेग न केवल फसलों को प्रभावित कर रहा है बल्कि इस का असर संपूर्ण ग्राम–परितंत्र में हुआ है।

आज गाँवों में सभी लड़कियाँ पढ़–लिख रही हैं। वे खेती का काम नहीं करना चाहतीं। पढ़ी–लिखी किशोरियों, नवयुवतियों की इच्छा यही है कि उन्हें कहीं नौकरी मिल जाये। अन्यथा वे गैर–खेती से जुड़ा कोई काम करना चाहती हैं। लड़कियाँ सिलाई–बिनाई सीखने को उत्सुक हैं। मूलतः वे ऐसा काम करना चाहती हैं जिसमें कुछ आय हो तथा रोज जंगल–खेतों में न जाना पड़े। खेतों में मिट्टी के ढेले फोड़ना और गाय–भैंस का गोबर उठाना उन्हें जरा भी पसंद नहीं। नवयुवतियाँ यह भी कह रही हैं कि वे घर में रह कर खाना बनाना, सफाई, बच्चों की परवरिश इत्यादि कार्यों में रूचि रखती है। बस जंगल, गौशाला और खेत के काम न करने पड़ें। सभी की इच्छा है कि शहरों–कस्बों में जा कर रहें। अगर यह संभव न हो तो कम से कम सड़क के किनारे बने हुए घरों में रहें।

पलायन और आजीविका के बीच एक सीधा संबंध इस सर्वेक्षण में दिखायी दिया। उन गाँवों में पलायन कम है जहाँ खेती से अनाज–सब्जी के अलावा कुछ पैसा घर में आ रहा है। उदाहरण के लिए ग्वाड़ (गोपेश्वर–जिला चमोली) में ग्रामवासी पारंपरिक खेती के साथ–साथ सब्जी और दूध बेचने का काम करते हैं। किमाणा (ऊखीमठ–जिला रूद्रप्रयाग) के ग्रामवासी केदारनाथ, मदमहेश्वर मंदिरों में पूजा तथा यात्रा–मार्गों में दुकान–होटल, खच्चर–कंडी तथा हेलीकॉप्टर से जुड़ी सेवाओं से आजीविका चलाते हैं। यहाँ पलायन कम है। चौंडली (बधाणी–कर्णप्रयाग), आटी (दन्या–अल्मोड़ा), जोश्यूड़ा (पाटी–चम्पावत) आदि गाँवों में लोग पारंपरिक तरीके से खेती करते हैं। इन गाँवों से पलायन अपेक्षाकृत अधिक है। आटी और चौण्डली गाँवों से कई पुरूष दन्या और कर्णप्रयाग के कस्बों में काम करने जाते हैं। पाटा–गल्ला (रामगढ़–जिला नैनीताल) की स्थिति बिल्कुल अलग है। यहाँ आजीविका का मुख्य स्रोत बागवानी है। सेब, आड़ू, प्लम, नाशपाती के अतिरिक्त मौसमी सब्जियाँ जैसे गोभी, मूली, बीन इत्यादि लगायी और बेची जाती है। महिलाएं, पुरूष एवं युवा सभी बगीचों में काम करते हैं, फलस्वरूप पलायन बहुत कम है।

आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी पता चला कि यद्यपि लोग खेती कर रहे हैं परंतु बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में इसे एक अनुकूल आजीविका के रूप में नहीं देखा जाता। किशोर–किशोरियाँ नौकरी करना चाहते हैं। बुजुर्ग भी सोचते हैं कि बच्चे नौकरी करें। बुजुर्ग महिलाएं भी बहुओं को गाँव में रहने के लिए मजबूर नहीं करना चाहतीं। बहुएं बच्चों को पढ़ाने के लिए शहरों–कस्बों में जाना चाहती हैं। किराये में घर ले कर वहीं रहती हैं। पति काम करते हैं, बच्चे पढ़ते है और परिवार के बुजुर्ग सदस्य खेती और गाँव–घर की देखभाल कर रहे हैं। शहरों में पल–बढ़ रहे बच्चे भविष्य में खेती करेंगे, यह मुमकिन नहीं लगता। इसके अतिरिक्त सभी चाहते हैं कि बच्चे खेती के अलावा कुछ अन्य काम करें, गाँव से

बाहर रहें।

किमाणा गाँव के नजदीक बसे ब्योलदा तोक का जिक्र करूंगी। यह अनुसूचित जाति के परिवारों का गाँव है। इस तोक में पहले बहुत से परिवारों ने खेती का काम छोड़ दिया था। वे मजदूरी कर के घर–परिवार का खर्च चलाते हैं। मिस्त्री, पत्थर तोड़ना, दुकानों–होटलों के काम आजीविका के मूल स्रोत हैं। फलतः गाँव में खेत बंजर पड़े थे। स्थानीय संस्था के प्रमुख श्री कैलाश पुष्पवाण ने निरंतर गाँव में बातचीत की। कुछ समय बाद दो–चार परिवारों ने सब्जी उत्पादन के लिए हामी भरी। मुश्किल यही कि मौखिक रूप से सहमत होते हुए भी किसी ने खेतों में हल नहीं लगाया। आनाकानी, बहाने चलते रहे और इसी में कई महीने निकल गये। बड़ी जद्दोजहद के बाद संस्था को सफलता मिली। कुछ परिवारों ने खेत तैयार किये और आलू बो दिया, फसल अच्छी हुई। अगले साल अनेक परिवारों ने आलू लगाये, स्वयं घर में उपयोग किया और बाजार में भी बेचे। इसी गाँव में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान की मदद से एक ग्राम शिक्षण केन्द्र भी संचालित हो रहा है। शिक्षिका का प्रशिक्षण अल्मोड़ा में हुआ है। गाँव में कुछ परिवार सब्जी उत्पादन के लिए आगे बढ़े हैं, कुछ परिवार मुर्गी–पालन भी कर रहे हैं।

पाटा, चौण्डली, आटी और जोश्यूड़ा गाँवों में पानी को बचाने, बढ़ाने और ग्रामवासियों को पेयजल सुलभ कराने की दिशा में ठोस काम हुए हैं। पाटा क्षेत्र में तीन सौ बारह टैंक बनाये गये। साथ ही, सरकारी योजनाओं से बने पुराने टैंकों को मरम्मत करके पुनः उपयोग में लाया गया। प्लास्टिक के अस्तर वाले इन सस्ते और सुविधाजनक टैंकों में आज दस लाख लीटर से अधिक पानी जमा है। घरेलू कामों के अलावा सिंचाई के लिए पानी का निरंतर उपयोग हो रहा है। पिछले दो वर्षों से सिंचाई के लिए जल सुलभ होने से ग्रामवासी मटर की फसल बेच कर अच्छा दाम अर्जित कर रहे हैं।

चौण्डली और जोश्यूड़ा–पिपलाटी गाँवों में मूल स्रोत से पानी ले कर गरीब और अनुसूचित जाति के परिवारों तक पहुँचाया गया। इससे न केवल पेय–जल सुलभ हुआ बल्कि पानी की कमी से होने वाले झगड़े भी कम हुए हैं। महिलाओं का कार्य–बोझ भी घटा। अब इन गाँवों में सब्जी का अच्छा उत्पादन हो रहा है।

ग्वाड़ गाँव के निवासियों ने बेमौसमी सब्जी का उत्पादन कर बाजार में बेचने के काम को प्राथमिकता दी। इसके लिए खेतों में पॉलीहाउस बनाये। वे इसके भीतर रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं करते। गोबर की खाद डालते हैं। जैविक तरीके से सब्जी उगाते और बेचते हैं।

आटी गाँव–दन्या में महिलाओं द्वारा संचालित होने वाले एक रैस्टोरेन्ट का निर्माण किया गया है। कम लागत में बांस, पत्थर–मिट्टी और टिन से बने इस ढाँचे में भोजन करने की जगह बनाने के अतिरिक्त विपणन के लिए भी एक स्थान नियत किया है। इस जगह से स्थानीय महिलाएं गाँवों में होने वाली सब्जियों, अनाज इत्यादि का विपणन स्वयं कर सकती हैं। पानी की सुविधा बढ़ाने के लिए क्षेत्र के पुराने नौलों–धारों का जीर्णोधार भी किया गया है।

उपरोक्त गतिविधियों का वर्णन नंदा के इस अंक में प्रकाशित हो रहा है। आशा है, उत्तराखंड महिला परिषद् से जुड़े अन्य महिला संगठन इस से प्रेरणा लेंगे। अपने–अपने गाँवों में कुछ अन्य रचनात्मक काम भी करेंगे।

इस अंक में इतना ही !

शुभेच्छु

अनुराधा पाण्डे

मेरा गाँव भन्याणी

उमा बोरा

जब से मैंने ग्राम शिक्षण केन्द्र की शुरूआत की, तब से बच्चों में बहुत बदलाव आए हैं। स्वयं मुझ में भी बहुत बदलाव आया है। पहले मैं घर से बाहर नहीं निकल पाती थी। लोगों से नहीं बोलती थी। पढ़ना–लिखना भी बहुत कम आता था। किसी से बात करने में झिझक होती थी। मुझे केन्द्र चलाने के लिए कई बार उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में प्रशिक्षण के लिए जाने का मौका मिला। साथ ही गणाई क्षेत्र में केन्द्र की मासिक गोष्ठियों में भी गयी। इस प्रकार से धीरे–धीरे मेरी झिझक दूर हुई।

जब से हमारा गाँव संस्था से जुड़ा है, तब से बहुत बदलाव आया। हमारे गाँव के निवासी ''पिछड़ा वर्ग'' की श्रेणी में आते हैं। इस कार्यक्रम से किशोरियों में बड़ा बदलाव आया। किशोरियाँ कई बार गोष्ठियों में प्रतिभाग करने के लिए अल्मोड़ा गयीं। वहाँ पर उन्होंने अपने गाँव के बारे में बात रखी। अन्य क्षेत्र की किशोरियों से भी उनका परिचय हुआ। अपने गाँव के अलावा अन्य क्षेत्रों के लोगों की बातों को जानने–सुनने का मौका मिला। आज हमारे गाँव से किशोरियाँ बारहवीं के बाद पढ़ने के लिए गणाई–गंगोली, पिथौरागढ़ तक जा रही हैं। इस प्रकार किशोरियों की समझ में परिवर्तन हुआ है। उनके अभिभावक भी उन्हें विद्यालय जाने देते हैं। पहले जब कभी गाँवों में गोष्ठियाँ होती थी तो मैं किशोरियों से कुछ बोल नहीं पाती थी लेकिन अब धीरे–धीरे बहुत परिवर्तन आया है। जब से हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र खुला तब से ऐसे अनेक अवसर मिले जब बाल अधिकार, महिला अधिकार इत्यादि मुद्दों पर जानकारी मिल सके। हमने हर महीने महिलाओं और किशोरियों के साथ गोष्ठियाँ शुरू की। इस से गाँव में बहुत जागरूकता आयी।

हमारे गाँव में समय–समय पर श्रमदान के द्वारा रास्तों की सफाई की जाती है। इस काम में गाँव की महिलाएं बढ़–चढ़ कर भाग लेती हैं। कभी झाड़ी काटना तो कभी रास्ते से पत्थर–कंकड़, प्लास्टिक इत्यादि उठाकर साफ करना, इन सभी कामों में महिलाएं बराबर प्रतिभाग करती हैं।

समय–समय पर महिलाएं उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा अल्मोड़ा में आयोजित की जाने वाली गोष्ठियों में प्रतिभाग करती हैं। वहाँ से वापस आकर गाँव में सभी के साथ गोष्ठी में की गयी बातचीत पर चर्चा होती है। हमारे शिक्षण केन्द्र को देखने के लिए समय–समय पर महिलाएं भी आती हैं। बच्चों के साथ केन्द्र में कौन सी गतिविधि की जाती है यह मैं उन्हें

समझाती हूँ।

लगभग हर माह केन्द्र में गोष्ठी की जाती है। महिलाओं ने कम्प्यूटर केन्द्र खोलने के लिए संस्था में बात की है। पिछली मीटिंग में महिलाओं ने कहा कि कमरे की समस्या नहीं होगी। हम कमरे की व्यवस्था करेंगे। आप कम्प्यूटर ले कर हमें दें। अब कम्प्यूटर केन्द्र खुलने की उम्मीद है। इससे गाँव के बच्चों का शिक्षण होगा।

पहले गाँव में होली का त्यौहार नहीं मनाया जाता था। इस केन्द्र के माध्यम से हम होली का त्यौहार मनाते हैं। अन्य त्यौहार भी मनाते है। आज हमारे गाँव में महिला संगठन और किशोरी संगठन बने हैं। साथ ही, शाम को बच्चों के लिए एक शिक्षण केन्द्र भी चलता है। गाँव में सभी का सहयोग मिलता है।

बच्चे हर साल बाल मेले में प्रतिभाग करते हैं। बाल मेला के लिये हम पूर्व से तैयारी करते हैं। मेले में सभी के सामने गतिविधियाँ प्रस्तुत करने से बच्चों की झिझक दूर होती है। सामान्य–ज्ञान प्रतियोगिता भी करायी जाती है। बच्चे सामान्य–ज्ञान के लिए केन्द्र और घर में खूब तैयारी करते हैं। बाल–मेलों का आयोजन हर साल अलग–अलग गाँवों में किया जाता है। इस से बच्चों को भिन्न–भिन्न गाँवों को देखने का मौका मिलता है। आज हमारे गाँव की किशोरियाँ संगठन में जुड़ी हैं। वे एक–दूसरे को देखकर आगे बढ़ने की सोचती हैं। समय निकाल कर हमेशा संगठन के कार्यों में सम्मिलित होती हैं। मैं उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा और संस्था का आभार व्यक्त करती हूँ। इस कार्यक्रम की वजह से मुझे आगे बढ़ने का मौका मिला।

महिला संगठन ग्वाड़

सुमन कुंवर

चमोली जिले में गोपेश्वर के समीप ग्राम ग्वाड़ स्थित है। गाँव का महिला संगठन बहुत वर्षों से बना हुआ है। नवज्योति महिला कल्याण संस्थान, गोपेश्वर, द्वारा ग्वाड़ में एक ग्राम शिक्षण केन्द्र खोला गया है। गाँव के ऊपर एक बहुत बड़ा जंगल है। ऊँची चोटी के नीचे और गाँव के ऊपर भगवान जाख राजा का मन्दिर बना है। गाँव के नीचे जौड़ा देवी का मन्दिर है। साथ ही अन्य देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। यहाँ के जंगलों में बाँज, बुरांश, अयांर, उतीस के पेड़ पाये जाते हैं। गाँव के नजदीक खड़ीक, ढेलका, भीमल, तिमला आदि के पेड़ हैं। गाँव में पानी की अच्छी सुविधा है। खेतों में सभी प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं परन्तु खाने के लिए कुछ भी नहीं बचता। जंगली जानवरों का आतंक बना हुआ है। इस कारण लोग खेती में रूचि नहीं रख पाते।

अन्य गाँवों की तुलना में हमारे यहाँ पलायन कम है। इस वर्ष हमारे गाँव में राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन के तहत सब्जी उत्पादन के लिए पॉलीहाउस बनाये गये। पर्याप्त मात्रा में पानी होने से ग्रामवासी सभी प्रकार की सब्जियाँ उगाते हैं। कुछ परिवारों के अलावा सभी लोग बाजार में सब्जियाँ बेचते हैं। पॉलीहाउस के अन्दर बैमौसमी सब्जी उगाई जाती है। इसका बाजार में अच्छा दाम मिल जाता है।

ग्वाड़ गाँव का संगठन खूब मजबूत है। सभी ग्रामवासी एक दूसरे की मदद करते हैं। हम समय–समय पर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की गोष्ठियों में भाग लेने अल्मोड़ा जाते हैं। वहाँ पर अन्य गाँवों की महिलाओं से चर्चा करते हैं। उन के कामों से हम सीखते हैं और वे हमारे कामों को सीख कर वैसा ही काम अपने गाँवों में करती हैं।

यू छ मेरू गढ़वाल

कुन्ती बर्त्वाल

पहाड़ों को रीति रिवाज, पहाड़ों को भलू समाज

पहाड़ों को बार त्यवार, फूल घरीया की सार

शुद्ध हवा–ठंडू पाणी, यख छोड़ी ते नि जाण, घर कुड़ी यखी बसांण

कनु भलू लगान, कनु भलू दिख्यान, यू छ मेरू पहाड़, यू छ मेरू गढ़वाल।

ऊँची निची च डांडी, टेड़ी मेड़ी च बाटी

यख देवतों की च भूमि, यख च फूलों की घाटी

यख छोड़ी ते नि जाण, घर कुड़ी यखी बसांण

कनु भलू लगान, कनु भलू दिख्यान, यू छ मेरू पहाड़, यू छ मेरू गढ़वाल।

बाँज–बुराँश का बौंण, जानि दगुड़यों की छीण

धार मा दाथुली पयान्दी, हंसी सुखी के गीत लगान्दी

यख छोड़ी ते नि जाण, घर कुड़ी यखी बसांण

कनु भलू लगान, कनु भलू दिख्यान, यू छ मेरू पहाड़, यू छ मेरू गढ़वाल।

बोड़ी बसन्त आलू, भाँति–भाँति का फूल खिलोलू

चैता मेना भेजी आला, आवु की बुज्याड़ी ल्याला

यख छोड़ी ते नि जाण, कुड़ी बाणी यखी बसांण

क्नु भलू लगान, कनु भलू दिख्यान, यू छ मेरू पहाड़, यू छ मेरू गढ़वाल।

पहाड़ों को रीति रिवाज, पहाड़ों को भलू समाज

कनु भलू लगान, कनु भलू दिख्यान, यू छ मेरू पहाड़, यू छ मेरू गढ़वाल।।

गाँवों में आजीविका संवर्धन

महेश गलिया एवं बची सिंह बिष्ट

वर्ष के अन्य माहों की तरह जनमैत्री संगठन ने अप्रैल और मई 2018 में भी पाटा, देवटांडा, बूड़ीबना, धूरा और अल्मोड़ी लोद गाँवों में सामुदायिक बैठकें की। इसके अलावा गल्ला गाँव में जनमैत्री की टोली बैठक हुई।

इन बैठकों में जल संचय टैंकों की प्रगति एवं उनके उपयोग पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी टैंक सुरक्षित और उपयोग में पाये गये। महिलाओं ने कहा कि समय–समय पर बैठकें करते रहने से उनका आत्म–विश्वास बढ़ता है। लड़कियों के अलावा युवा लड़को के कौशल बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन की बात भी संगठन की सदस्याओं ने कही। किशोर और युवा बैठकों में उपस्थित लड़कों ने कहा कि वे हाथ का काम जैसे–पिरूल की टोकरी बनाना, फलों की पैकिंग, टूरिज्म के लिए गाइड का कार्य करना इत्यादि रोजगार–परक कौशल सीखना चाहते हैं। लड़कियों ने कहा कि वे कम्प्यूटर, नर्सिंग, सिलाई का कार्य सीखने बाहर जाना चाहती हैं। इन बैठकों के दौरान महिलाओं एवं किसान पुरूषों ने कहा कि पानी बचाने का कार्य आगे भी होना चाहिए। अधिकतर लोगों ने पॉलीशीट की माँग की। उनका यह भी कहना था कि जो वन पंचायतें ''जायका'' प्रोजेक्ट में नहीं ली गई हैं उनमें जंगली जानवरों के लिए फलदार पौध और पानी पीने के कुण्ड का निर्माण करना उपयोगी होगा। इससे जंगली जानवर गाँवों में नहीं आयेंगे।

धूरा, पाटा, गल्ला, लोद, तल्ला सूपी, कोकिलबना, सुनकिया, बूड़ीबना, गजार, सूनी मल्ला, बुरांशी और धानाचूली तक लोगों के बीच संपर्क, बैठकें और ''राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन'' के कार्यों का अवलोकन किया। पुराने ''निकरा'' परियोजना के अन्तर्गत बने दो टैंकों का सुधार किया। टैंको का उपयोग टमाटर, प्याज, मिर्च, मटर, आलू की फसल में पानी देने के लिए किया जा रहा है। ग्रामवासी लगातार माँग कर रहे हैं कि पॉलीशीट उपलब्ध हो जिससे पानी बचाने का कार्य कर सकें।

इस वर्ष ओले से फलों को क्षति पहुँची है। जलवायु में तेजी से बदलाव जैसे–अचानक ठंडा, कभी गर्मी या बारिश, आँधी इत्यादि का फलों पर असर हुआ है। फल, तेजी से पेड़ों से गिर रहे हैं। अभी तक वन–पंचायतों और जनमैत्री के सघन कार्य क्षेत्र में आग का प्रभाव नहीं हुआ है। ग्रामवासी जिम्मेदारी से जंगलों को नुकसान पहुँचाने वाले गाँव के परिवारों और वाह्य–कारकों की निगरानी में लगे हैं।

इस बीच तेजी से गर्मी बढ़ी और पानी की कमी देखने को मिली। जिन परिवारों ने पानी बचाया था, वे संयमित तरीके से पानी का उपयोग कर रहे हैं। पानी को लेकर उनकी समझ साफ है। वे थोड़ा इस्तेमाल करके खेती और घर का काम चला रहे हैं। एक पौधशाला बनाने वाले किसान ने पानी का उपयोग करके इन दो वर्षों में एक लाख रुपये कमाये। उनके पास आज भी एक से दो लाख तक की पौध तैयार है।

श्रीमती ममता नयाल के मार्गदर्शन में पाँच बालिकाओं ने बुनाई का कार्य जारी रखा है। अन्य बालिकाओं एवं महिलाओं को सिखाने के लिए अगस्त के बाद दूसरी जगह केन्द्र शुरू किया जायेगा। कम्प्यूटर में दस बच्चे लगातार शाम चार बजे से छः बजे तक अभ्यास करते हैं। ऑपरेटर शिक्षक की कमी से नये बच्चे शामिल करना मुश्किल हो रहा है।

जल, जंगल, जमीन पर सामुहिक कार्य करने से ग्रामवासियों की समझ का स्तर बेहतर हुआ है। विशेष रूप से महिलाओं की अभिव्यक्ति बढ़ी है। इस वर्ष ग्राम समुदाय ने पैंतीस लाख लीटर से अधिक पानी बचाया। बागवानी और सब्जी उत्पादन में पानी का उपयोग करने से लोगों की आय बढ़ी है। महिलाओं, लड़कियों का कार्य बोझ भी घटा है। उन्हें घरों से बाहर निकलकर कुछ नया सीखने का अवसर मिला है। ग्रामवासियों ने जलवायु परिवर्तन से निपटने का प्रत्यक्ष तरीका सीखा। जल, जंगल, जमीन के आपसी सम्बन्ध को समझा। इस समझ के आधार पर उन्होंने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझा, इसके असर को कम करने और निपटने की सहज रणनीति और कार्यक्रम भी सोचे।

इस काम से संगठन और कार्यकर्त्ताओं को लाभ हुआ। संगठन की पहचान बढ़ी। कार्य करने की छवि बनी। कार्यकर्त्ता के रूप में हमने जल संचय की तकनीक पर कार्य किया। इसकी पैरवी की। साथ ही ग्राम परितंत्र के घटकों के सन्तुलन को समझा। हमने तकनीक और समुदाय दोनों पर संतुलित रूप से कार्य किया। इस से कार्यक्रम का क्रियान्वयन सफलता से हो सका।

कार्यक्रम को करने में आयी कठिनाइयाँ इस प्रकार से हैं—कुछ लोगों ने कहा कि जनमैत्री संगठन लोगों तक सिर्फ पॉलीथीन पहुँचा रहा है, निर्माण के पैसे गाँव में नहीं दे रहा। क्षेत्र में अन्य बहुत से लोग पॉलीटैंक बनाना चाहते थे। उन्हें पॉलीशीट नहीं दे सके। इस वजह से वे नाराज हो गये। कुछ लोग इसे सरकारी कार्यक्रम ही समझ रहे हैं। उन्होंने बिना पैसे के टैंक बनाने से इन्कार कर दिया। कुछ टैंकों में जानवर, पेड़ इत्यादि गिर गये थे उन्हें ठीक किया गया। लोगों को समझाने के लिए कई बार गाँव में जाना पड़ा। खराब मौसम के कारण स्वास्थ्य भी बिगड़ा। अन्य गाँवों से लोग टैंक देखने आये। महिलाएं भी आई। इसका

प्रभाव भी अच्छा हुआ। पत्रकारों, क्षेत्र के अनुभवी लोगों, युवाओं को साथ लेकर जल संचय के कार्य को प्राथमिकता में लाने में मदद मिली।

ग्राम परितंत्र को समग्र रूप से समझने और जलवायु परिवर्तन की दृष्टि से समृद्ध बनाने की दिशा खोजने के लिए ग्रामवासियों ने टोली में कार्य किया, जो सफल रहा।

गल्ला में एक कम्प्यूटर केन्द्र खोला गया है। एक बुनाई केन्द्र और एक फल प्रसंस्करण इकाई भी है। सिलाई केन्द्र में पहले महिलाओं ने काम सीखा। वे घरेलू कार्य करते हुए कपड़े भी सिल रही हैं। पाँच बालिकाओं ने देहरादून और दिल्ली में जाकर प्रशिक्षण लिया। उन्हें आगे कार्य करना है। इन दो वर्षों में गल्ला में अनेक लोग काम देखने आये। डॉ0 ललित कपूर जी पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार, डॉ0 किरीट कुमार पर्यावरण संस्थान कोसी, फुलब्राईट फैलो–सियरा, अमेरिका, के अलावा स्थानीय महिलाएं, किसान, शिक्षक, कर्मचारी पत्रकार इत्यादि प्रमुख अतिथि रहे।

निश्चित ही हमने इस कार्यक्रम से बहुत सीखा। लोगों का अपना कार्यक्रम बनने से काम समय से पूरा हो गया। गाँव की महिलाएं, युवा, सयानों के सहयोग से हम पहली बार एक साथ इतने टैंक बनाने और पानी का संचय करने में सफल हुए। इस कार्य में सम्मिलित होने का अवसर देने के लिए हम उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा का आभार प्रकट करते हैं।

भविष्य में युवाओं को तकनीकी शिक्षा देने के लिए सामुहिक प्रशिक्षण केन्द्र बनाने और कसियालेख एवं सूपी मल्ला गाँवों में बैठकें करना तय किया है। पानी बचाने के लिए अन्य गाँवों को जोड़ना है। आसपास के सभी ग्रामवासी इसके लिए लगातार माँग कर रहे हैं। जंगलों में जुलाई–अगस्त में चीड़ उन्मूलन और वृक्षारोपण का कार्य प्रस्तावित है। जलबंध बनाने, स्रोत संरक्षण एवं सुधार का कार्य प्रस्तावित किया गया है। बागवानी, सब्जी उत्पादन, फल प्रसंस्करण के अलावा मशरूम उत्पादन पर कार्य करने के लिए प्रयास चल रहे हैं। समुदाय के बीच विमर्श को और सघन बनाने के लिए लगातार क्षेत्र के गाँव–गाँव में जाकर संवाद किया जा रहा है।

जल संरक्षण और आजीविका संवर्धन

शिव नारायाण किमोठी

शेप संस्था बधाणी, जिला चमोली, द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षण संस्थान, अल्मोड़ा के सहयोग से क्षेत्र के गाँवों में आजीविका संवर्धन, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, महिला शिक्षण, जागरूकता गोष्ठियाँ एवं विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों से ग्रामवासियों को लगातार प्रेरित किया जा रहा है। इस बार की मुख्य गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है।

संस्था ने विकास–खण्ड कर्णप्रयाग, जनपद–चमोली, के ग्राम पंचायत पुडियाणी, कुकड़ई, दियारकोट, जाख, चौण्डली, सेरा एवं सुन्दरगाँव में जागरूकता गोष्ठियों का आयोजन कर मौसम के कारण आये परिवर्तनों को देखते हुए धारे–नौले एवं पाइप लाइनों में पानी की उपलब्धी, जंगलों की पहले और आज की स्थिति इत्यादि विषयों पर चर्चा की। जंगलों का आच्छादन एवं फैलाव, जंगली जानवरों से फसलों का नुकसान, पेयजल की कमी, फसल चक्र में बदलाव आने के कारण, अनुकूलन के सापेक्ष उपायों के समाधान, खेती पर आश्रित परिवारों का आकलन, आजीविका के अन्य साधनों पर भी चर्चा की गई। जो लोग गाँवों में रह रहे हैं उनके लिए आजीविका के क्या–क्या स्थानीय साधन हो सकते हैं, इस मुद्दे पर प्रतिमाह सतत् रूप से गोष्ठियों का आयोजन किया गया। उक्त गोष्ठियों में महिला संगठन, गाँव के बड़े–बुजुर्ग एवं किशोरियों से नियमित संवाद हुआ।

ग्राम पंचायत चौण्डली एवं ग्राम पंचायत जाख में महिला संगठनों के साथ मिल कर फूलगोभी के बीज उपलब्ध कराये तथा सामूहिक क्यारियों (पौध नर्सरियों) का विकास किया। अक्टूबर माह में खेतों में फूलगोभी लगायी। इस कार्य में ग्राम पंचायत चौण्डली के पचास परिवार एवं ग्राम पंचायत जाख के पैंतीस परिवारों द्वारा प्रतिभाग करते हुए दो माह की सब्जी (फरवरी एवं मार्च 2018) का अच्छा उत्पादन हुआ। अगले वर्ष इस कार्यक्रम को वृहद् रूप से आगे बढ़ाने पर आम सहमति बनी। सब्जी–उत्पादन की खासियत यह रही कि इसे बन्दर नुकसान नहीं पहुँचा सके।

चयनित ग्राम चौण्डली में महिला संगठन एवं संस्था कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से भगान तोक, पातल तोक, सेरा मंगरा तोक एवं बधाणी में मां नन्दा देवी मुख्य द्वार के समीप पाँच हजार शहतूत की कटिंग का रोपण किया गया। शहतूत के पेड़ों के तैयार होने पर इसे गाँव की आजीविका से जोड़ा जाना भी प्रस्तावित है। इसमें चारा पत्ती के साथ–साथ रेशम कीट का

पालन एवं शहतूत की डण्डियों से टोकरी इत्यादि के निर्माण कार्यों से स्थानीय समुदाय को लाभान्वित किया जाना संभावित है।

जल संरक्षण एवं आम ग्रामीणों तक पेयजल की पहुँच सुलभ करने के लिए किये जा रहे प्रयासों में ग्राम पंचायत चौण्डली में छोड़ा मंगरा स्रोत से गाँव तक भूमिगत जी आई पाइप लाइन का निर्माण किया। गाँव की निवासी श्रीमती गीता देवी ने भूमिदान किया। इस सहयोग की बदौलत दस हजार लीटर क्षमता का पक्का टैंक बन पाया। जल स्रोत संरक्षण, सुधार, चैम्बर का निर्माण आदि कार्यों से पचास परिवारों को पेयजल एवं अन्य आवश्यकताओं के लिए पानी उपलब्ध हुआ। उक्त पेयजल लाइन एवं जल संरक्षण टैंक को गाँव की पुरानी सप्लाई के साथ–साथ जोड़ते हुए मुख्य सार्वजनिक स्थान रैला मंगरा पर स्टैण्ड पोस्ट तथा महिलाओं के जंगल जाने के मुख्य मार्ग, दुणखिल धार, में स्टैण्ड–पोस्ट का निर्माण कर पेयजल उपलब्ध कराया गया। उक्त मार्ग में एक किलोमीटर से अधिक दूरी तक कोई भी पेयजल स्रोत (धारा या नौला) उपलब्ध नहीं है। जंगल आने–जाने वाली महिलाओं को इस व्यवस्था से बहुत सुविधा हो रही है।

पेयजल संरक्षण कार्यक्रम के तहत पानी की उपलब्धि बढ़ने से गाँव के आस–पास स्वच्छता आयी है। अब लोग बाहर जाने के बजाय निजी शौचालयों का उपयोग कर रहे हैं। इस तरह उक्त कार्यक्रम स्वच्छ भारत अभियान से भी जुड़ गया है। गाँव की पुरानी जल सप्लाई एवं मुख्य स्थानों पर पानी मिलने से लोगों का ध्यान सब्जी के उत्पादन की ओर हुआ है। भविष्य में सब्जी उत्पादन से आजीविका अर्जित करने का साधन मजबूत होगा।

पी.वी.सी. पाइप एवं स्प्रिंकलर की सहायता से पानी की खपत को चार गुना कम किये जाने के सिद्धान्त का प्रायोगिक प्रदर्शन ग्राम समुदाय के साथ किया गया ताकि इस तरीके से सिंचाई पर समझ विकसित की जा सके।

उपरोक्त रचनात्मक कार्यक्रमों में महिला संगठन द्वारा शहतूत कटिंग रोपण, स्रोत के समीप झाड़ी कटान तथा टैंक–निर्माण, कार्य स्थल तक रेत एवं कंक्रीट ले जाने के कार्यों में निरंतर श्रमदान किया गया। चयनित ग्राम चौण्डली, दियारकोट एवं कुकड़ई में ग्राम–पंचायत की वन भूमि एवं विभिन्न तोको का सर्वेक्षण करके वृक्षों की प्रजातियों का आच्छादन एवं वितान, पुराने एवं नये वृक्षों का सर्वेक्षण एवं गणना, कालाबाँस उन्मूलन आदि कार्यक्रम सम्पादित किये गये।

क्षेत्रीय गाँवों में महिला संगठनों के पास मडुवा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। घर में

उपयोग के बाद भी बचा रहता है जो कि कुछ ही माह में खराब हो जाता है। इसके अलावा झंगोरा, सोयाबीन, दालें चौलाई, जौ, तिल आदि का संग्रहण, प्रसंस्करण एवं विपणन से उपरोक्त फसलों को नकदी फसल के रूप में बेचने के लिए संस्था क्षेत्र बधाणी में पहाड़ी उत्पादों का संग्रहण, प्रसंस्करण एवं विपणन इकाई की स्थापना की गयी है। निर्माण–कार्य पूरा हो चला है। आवश्यक संयंत्र भी क्रय कर लिए गये हैं।

ग्राम पंचायत चौण्डली में कृषि भूमि के बाहर वन भूमि पर पच्चीस सौ आम के बीज, माह अगस्त 2018 में रोपित किये गये। इसका उद्देश्य भविष्य में कुछ हद तक जंगली जानवरों को जंगल में ही फल उपलब्ध कराना था।

उपरोक्त कार्यक्रमों को करने से संस्था एवं ग्राम समुदाय (महिला संगठन एवं गाँव के निवासी) सभी को लाभ हुआ है। गाँव में पेयजल का संकट खत्म हुआ है। महिलाओं का कार्यबोझ भी कम हुआ है। इसके साथ–साथ महिलाओं तथा ग्राम समुदाय के कृषि उत्पादों को नकदी फसल से जोड़ने पर स्थानीय लोग खेती की ओर जागरूक हुए हैं। उनकी आजीविका में भी सुधार आयेगा। स्थानीय युवा भी उक्त कार्यक्रम से जुड़ रहे हैं।

उक्त परियोजना के संचालन में महिला संगठनों एवं युवाओं द्वारा सहयोग किया गया किन्तु अब लोग पहले की तरह श्रमदान के लिए एकदम तैयार नहीं होते। सभी को काम के बदले पैसा चाहिए। कोई जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं होता, इसलिए संस्था के कार्यकर्त्ताओं को स्वयं बहुत मेहनत करनी पड़ी।

चयनित ग्राम पंचायत चौण्डली में पेयजल संकट से निजात मिली है। जल संरक्षण एवं संवर्धन तथा वन संरक्षण, संवर्धन के प्रति जागरूकता बढ़ी है। स्थानीय पहाड़ी उत्पाद संग्रहण–प्रसंस्करण एवं विपणन इकाई की स्थापना से गाँवों में आजीविका सुधार के काम में मदद मिलेगी। स्वयं संस्था तथा कुछ युवाओं को भी इसका लाभ मिलेगा।

पूर्व प्रधान, चौण्डली, श्री उम्मेद सिंह रावत, ने अपने वक्तव्य में कहा कि ग्रामवासी पिछले तीन ग्राम प्रधानों के कार्यकाल से पेयजल के लिए प्रस्ताव रखते आये हैं किन्तु इस विषय में कोई कार्य नहीं हो सका। संस्था द्वारा ही उत्तराखण्ड सेवा निधि अल्मोड़ा के सहयोग से हमें पेयजल उपलब्ध हुआ है, इसके लिए ग्रामवासी संस्था के आभारी हैं।

ग्राम परितंत्र की जाँच

बधाणी, कर्णप्रयाग, जिला चमोली के क्षेत्र में तेज ढलान वाले वनों में मृदा–आच्छादन न्यून होने के कारण बाँज के वृक्षों की नयी पौध नहीं पनप रही है। यहाँ पर स्थानीय झाड़ियों का रोपण किया जा सकता है। ग्रामवासियों, खासकर महिला संगठनों, द्वारा बचाये गये जंगलों से चारा पत्ती गाँव के नजदीक मिल रही है। भविष्य में इसी तरह गाँव के ग्राम वनों को संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है। घरों के बांसो में दीमकें बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। इस से पता चलता है कि यहाँ की जलवायु गर्म हो गयी है या दीमकों के रहने के अनुकूल हो रही है। बाँज प्रजाति के ग्राम वनों में चीड़ के पेड़ों की घुसपैठ बढ़ी है। झाड़ियों में काला बाँसा तेजी से बढ़ रहा है।

गाँव के जल स्रोतों में प्रवाह की दर पहले की अपेक्षा कम हुई है। भविष्य में इन स्रोतों को संरक्षित करने की आवश्यकता है। बधाणी क्षेत्र में जंगली जानवर जैसे बन्दर, सुअर, लंगूर, साही, घुरड़, काकड़, भालू, चूहे आदि तथा पक्षियों में गदेला, तोते, जंगली मुर्गियाँ आदि कृषि फसलों को बहुत नुकसान पहुँचा रहे है। इनकी रोकथाम के ठोस उपाय होने जरूरी है। कीटों में प्रमुख रूप से कुरमुला फसलों को नुकसान पहुँचा रहा है। दालों में विभिन्न प्रकार के कीट नुकसान पहुँचा रहे हैं।

ग्राम समुदाय में लोग सहयोगी हैं। संस्था के साथ ग्रामवासियों की पूरी सहभागिता रहती है। पशुपालन पारंपरिक विधि से ही हो रहा है। पशुओं में खुरपका, मुंहपका, बुखार आदि की शिकायतें आम हैं। आमतौर पर गाँव समुदाय का स्वास्थ्य सामान्य है तथापि आम बीमारियों में महिलाएं अधिकांशतः कमर दर्द, घुटनों का दर्द, गॉलब्लेडर की पथरी, एनीमिया आदि बीमारियों की शिकार हैं। ग्राम परितंत्र का अध्ययन सिखाने वाला रहा। कई प्रकार के वृक्षों एवं झाड़ियों की जानकारी मिली। पहले हमें ऐसी जानकारी नहीं थी। गाँव समुदाय के साथ–साथ संस्था की पूरी टीम को इसका लाभ मिला।

गाँव की बैठकों से कुछ सुझाव सामने आये। इसमें यह सुझाव मुख्य रहा कि वन संवर्धन का काम ग्राम वनों के वृक्षविहीन तोको में ही किया जाना चाहिये। जल संचय, चाल–खाल एवं स्रोत सुधार के द्वारा पानी का संरक्षण, संवर्धन होगा। बागवानी विकास में कीवी, आड़ू, प्लम आदि फलों का उत्पादन क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा। स्वास्थ्य अध्ययन एवं पोषण पर जागरूकता के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पशुधन के लाभ के लिए उन का स्वास्थ्य अध्ययन एवं प्रतिरक्षक कार्यक्रम पर काम करने की आवश्यकता है। पारम्परिक खेती को बचाने के प्रयास होने जरूरी हैं।

जलवायु परिवर्तन एवं आजीविका

महानंद बिष्ट

इस वर्ष ग्रामीण आजीविका सुधार कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन से हो रहे बदलावों पर गहन विचार–विमर्श किया गया। गंगोल गाँव की गोष्ठी में चर्चा हुई कि जलवायु परिवर्तन के कारण लोगों की आजीविका में परिवर्तन हो रहा है अथवा नहीं। इस से फसलों, फलों के उत्पादन में कमी आयी है अथवा उत्पादन कम होने के अन्य कोई कारण है। साथ ही यह भी समझा कि खेतीबाड़ी के प्रति लोगों की रूचि कम हो रही है। खेतों में उत्पादन कम होने के कारण तथा उत्पादकता बढ़ाने के उपायों पर भी चर्चा हुई।

गोष्ठी में उपस्थित सभी ग्रामवासियों का कहना था कि वर्तमान समय में खेतीबाड़ी के प्रति रूचि कम हुई है। दिनभर खेतों में काम करके भी उत्पादन नहीं हो रहा। जितनी फसल प्राप्त होती है उसे जंगली जानवर खा जाते हैं। गाँव की बुर्जुग महिलाओं का कहना है कि लड़कियों और युवा स्त्रियों में कार्य करने की क्षमता कम हो गई है। सभी चाहते हैं कि खेती के अलावा हम कोई अन्य काम करें। लोग खेतीबाड़ी में रूचि कम ले रहे हैं फिर भी अभी तो गाँव में सभी लोग थोड़ा–बहुत खेतीबाड़ी करते हैं। खेती न करें तो कुछ अन्य काम भी नहीं है।

जलवायु परिवर्तन से खेतीबाड़ी में बहुत अंतर आया है। ग्रामवासियों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण फसलें नहीं हो रही है। ग्रीष्म ऋतु में बारिश नहीं होती। इस से सारी फसल सूख जाती है। वर्षा ऋतु में बहुत तेज बारिश होती है और फसल पूरी तरह नष्ट हो जाती है।

गंगोल गाँव में पानी की कमी नहीं है। ग्रीष्म ऋतु में पानी कम हो जाता है तो गाँव के पास ही एक जलस्रोत है। इस स्रोत में पानी कम मात्रा में है लेकिन सभी ग्रामवासी इस का उपयोग करते हैं। ग्रामवासियों का कहना है कि गाँव के ऊपर पानी की एक बड़ी टंकी है। उस टंकी का पानी सरकारी पाइप लाइन द्वारा घरों तक आता है पर ग्रीष्म ऋतु में पाइप लाइन का पानी कम हो जाता है।

विगत दस–बारह सालों से ग्रामवासी अपनी आजीविका दूध बेच कर चलाते हैं। गाँव में सभी ने गाय पाली है। दूध को बाजार में बेचने स्वयं जाते हैं।

गंगोल गाँव में साग–सब्जी का उत्पादन किया जाता है। इस में आलू, प्याज, मिर्च, धनिया, मटर, गोभी, बीन्स आदि का उत्पादन करते हैं पर बेचते नहीं हैं। अब सब्जियों पर

कीड़े–मकोड़े ज्यादा लग रहे हैं। इस से उत्पादन कम हो रहा है। इसमें सबसे अधिक नुकसान बारिश के समय घोंघा नामक जीव से होता है। यह सब्जी के उगते ही नर्म पत्तियों को खा लेता है। गाँव में प्याज की अच्छी खेती होती है। प्रत्येक परिवार प्याज उगाता हैं पर बेचता कोई नहीं। गाँव में सन्तरे अच्छे होते थे। अनेक परिवार सन्तरे बेचते थे पर आज अधिकतर पेड़ सूख गये हैं। जो पेड़ बचे हैं उन में बहुत छोटे सन्तरे होते हैं, जिससे रोजगार का यह साधन अब समाप्त हो चला है।

गाँव में महिलाएं घास लाने के लिए लगभग सात किलोमीटर पैदल चल कर जंगल तक जाती हैं। गाँव से जंगल बहुत दूर है। गाय–भैसों के लिए घास लेने जाना ही पड़ता है। नजदीक के जंगल में घास कम होती है, जो होती है उसे पहले ही काट लेते हैं।

ग्राम कठूड़ में भी खेतीबाड़ी व आजीविका से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई तथा जलवायु परिवर्तन से फसलों और स्थानीय व्यवसाय में हो रहे परिवर्तनों के बारे में विचार–विमर्श हुआ। खेतीबाड़ी से लाभ, अनाज का उत्पादन कम हो रहा है अथवा बढ़ा है, इन विषयों पर बातचीत हुई। खेती अगर आजीविका का स्रोत नहीं रही तो ग्रामीणों की आजीविका के स्रोत क्या है? इस में महिलाओं की स्थिति बदल रही है अथवा नहीं, यह विषय चर्चा में रहा। विगत आठ–दस वर्षों में कौन सी फसलों को बोना छोड़ दिया, जल संरक्षण के तरीके और पलायन आदि मुद्दों पर भी महिलाओं ने विचार रखे।

गोष्ठी में उपस्थित रहे सभी लोगों का कहना था कि खेतों में मेहनत करते हैं फिर भी अनाज कम मात्रा में प्राप्त होता है। कुछ तो जंगली जानवर खा जाते हैं, कुछ प्रभाव मौसम में

परिवर्तन की वजह से हुआ है। जब जरूरत हो तब वर्षा नहीं होती। फसलों को बन्दरों द्वारा बहुत नुकसान हो रहा है। कठूड़ गाँव के जंगल में बन्दरों की इतनी बड़ी टोली है कि उसे भगाना भी मुश्किल है।

पहले की तुलना में क्षेत्र से पलायन बढ़ा है। पहले लोग नौकरी करने के बाद अवकाश ले कर खेतीबाड़ी करने गाँव में ही वापस आते थे। परिवार गाँव में ही रहता था पर आज पूरा परिवार शहरों में बस रहा है। पलायन से गाँव खाली और जमीन बंजर हो रही है।

वर्तमान समय में खेती आजीविका का साधन नहीं रहा। लोग रोजगार के लिए गाय–भैंस पालते हैं और बाजार में दूध बेचते हैं। साथ ही, रोजगार गारंटी में काम करके आजीविका चलाते है। चर्चा में यह बात भी आई कि ग्रीष्म ऋतु में पानी की मात्रा कम हो जाती है, उस समय इस समस्या से जूझना पड़ता है। पानी का संरक्षण नहीं करते हैं।

ग्राम बणद्वारा में चर्चा की गयी कि जलवायु परिवर्तन के कारण आजीविका के स्रोत एवं कार्य करने की प्रवृति में परिवर्तन हुआ है अथवा नहीं। इसके साथ ही, खेतीबाड़ी के प्रति रूचि कम हो रही है। जलवायु परिवर्तन से खेतीबाड़ी में आने वाले अंतर तथा आजीविका में बदलाव, खेतों में उत्पादन कम होने के कारण तथा उत्पादन बढ़ाने के तरीके पर बातचीत हुई। गोष्ठी में उपस्थित सभी लोगों का कहना है कि खेती के प्रति रूचि कम हो रही है क्योंकि उत्पादन कम है। बणद्वारा गाँव में कुछ लोग सिर्फ चारे के लिए खेती करते हैं। बारिश के कारण भूस्खलन हो रहे हैं। अब ठीक समय पर बारिश बहुत कम होती है या बिल्कुल नहीं होती है। तेज वर्षा से भी फसल नष्ट हो जाती है। अगर समय पर वर्षा हो तो गाँव में अनाज का उत्पादन अच्छा हो सकता है। बैठक में संस्था के कार्यकर्त्ताओं द्वारा पलायन पर भी चर्चा की गई।

ग्राम देवलधार में मुख्य रूप से इस विषय पर चर्चा हुई कि जलवायु परिवर्तन के कारण लोगों की आजीविका के स्रोत एवं कार्य करने के तरीके में परिवर्तन हुआ है अथवा नहीं। पिछले बीस वर्षों में खेती में आये बदलावों पर भी चर्चा हुई। इस के साथ ही जलवायु परिवर्तन से कृषि पर प्रभाव, दालें जिनका उत्पादन अब नहीं हो रहा है, खेती में अनाज के उत्पादन में कमी, उत्पादन बढ़ाने के उपाय, संस्थाओं से होने वाले लाभ, पलायन, महिलाओं की स्थिति आदि विषयों पर विचार–विमर्श हुआ।

गोष्ठी में उपस्थित महिलाओं का कहना है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन से फसलें कम होती जा रही हैं। इस से बाजार पर निर्भरता बढ़ रही है। पढ़ी–लिखी महिलाएं खेतीबाड़ी

में रूचि कम ले रही हैं। अनाज तो होता है पर जंगली जानवरों का प्रकोप ऐसा कि वे सारी फसलों को बर्बाद कर देते हैं। देवलधार गाँव की बुजुर्ग महिलाओं का कहना है कि अब बहुएं रोजगार ढूंढ़ रही हैं। कोई भी अन्य काम हो उसे करने की इच्छुक हैं पर खेतीबाड़ी नहीं करना चाहती।

ग्राम ग्वाड़ में आयोजित बैठक में जलवायु परिवर्तन के कारण लोगों की आजीविका में हो रहे परिवर्तनों पर चर्चा की। खेतीबाड़ी से उत्पादन, गाँव में लोगों की आजीविका के साधन, पॉलीहाउस बनने से सब्जी उत्पादन में बढ़ोत्तरी, संस्था से लाभ आदि मुद्दे चर्चा में रहे। गोष्ठी में उपस्थित महिलाओं का कहना है कि खेतों में लोगों की रूचि घटती जा रही है जिससे अब उत्पादन कम हो रहा है। अब कोई भी खेती करने में रूचि नहीं ले रहा है। परिश्रम कोई करना नहीं चाहता।

ग्वाड़ गाँव में आजीविका के बहुत से स्रोत हैं। जैसे रोजगार गारंटी में काम, फल, सब्जी बेचकर आजीविका चलाना, दूध बेचना इत्यादि। गोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागियों का कहना है कि उन का मुख्य व्यवसाय सब्जी और दूध बेचना है। गाँव में सभी जर्सी गाय पालते हैं और दूध बेचते हैं। दो–चार परिवारों के पास घोड़े–खच्चर भी हैं। इसी से आजीविका चलती है।

पॉलीहाउस बनाने से हुए लाभ और हानि पर चर्चा हुई। महिलाओं का कहना है कि पॉलीहाउस बनने से सब्जी का उत्पादन अच्छा हो रहा है। पहले व्यापार के लिए अधिकतर सब्जी खेतों, बगीचों में उगाई जाती थी पर अब पॉलीहाउस उपलब्ध हो रहे है। इस के भीतर सब्जी का अधिक उत्पादन हो रहा है। गाँव में आलू, प्याज, मटर, टमाटर, कद्दू, लौकी, हरी सब्जी, धनिया, पालक, मेथी, गोभी, मसालों में मिर्च, हल्दी आदि बोये जाते हैं।

ग्राम परितंत्र की जाँच

इस गतिविधि से ग्वाड़ गाँव के बारे में कई नई जानकारियाँ प्राप्त हुई। जंगलों में कालाबांसा व चीड़ के पेड़ों की बहुतायत है। वहाँ छोटे पेड़ कम मात्रा में पनप रहे हैं। भूमि ढ़लान वाली है और मृदा का आच्छादन कम है।

ग्रामवासियों के साथ हुई चर्चा से जानकारी हुई कि पूर्व में वन बहुत घने थे। कम परिवार होने से जंगलों में दबाव भी कम था। परिवार बढ़ने के बाद पशुओं की संख्या भी बढ़ी। चारे की आवश्यकता बढ़ी और जंगल में दबाव भी बढ़ा। जंगल धीरे–धीरे कम होता चला गया। हालांकि कुछ वर्षों से गैस की सुविधा उपलब्ध होने के कारण जलाऊ लकड़ी पर दबाव कम हुआ है लेकिन मवेशी अधिक होने तथा दूध विक्रय पर निर्भरता बढ़ने के कारण घास के लिए दबाव बढ़ता जा रहा है।

जंगलों को संरक्षित करने के लिए कुछ हिस्सों को बंद किया जाता है। कुछ वर्षों के बाद खोलकर वहाँ से एक साथ चारापत्ती एकत्र की जाती है। इस तरीके से जंगल अच्छे रहते हैं। वन–भ्रमण के दौरान स्थानीय प्रजातियों के बारे में जानकारी हासिल हुई। इस क्षेत्र में अधिकतर जंगल मिश्रित हैं। उतीस, बाँज, अयांर, बुरांश, मेवा, सोइ, ढेलको, खोकी आदि प्रमुख प्रजातियाँ पाई गई। संगठनों द्वारा अपने–अपने गाँवों के जंगलों में रोकथाम की गई है। बाहरी लोगों का आने से रोकने के कारण कुछ सीमा तक वनों की स्थिति ठीक हुई है।

लगभग सभी गाँवों के जलस्रोतों में पानी की कमी दिखाई दे रही है। वनों के कटान के साथ–साथ बारिश का न होना, दस–पन्द्रह सालों से लगातार छः–सात दिनों तक बारिश का न होना आदि कारण ग्रामीणों के साझा अनुभवों में शामिल रहे। जंगलों में कालाबांसा तथा चीड़ की घुसपैठ है।

जंगल में करने से भ्रमण यह भी अनुभव हुआ कि पिछले कुछ सालों से

सीमेंट की छत वाले मकान बनने के कारण इमारती लकड़ी की खपत कम हुई है। कई बड़े–बड़े पेड़ बूढ़े होते जा रहे हैं।

जंगली जानवरों का आतंक बढ़ने से फसलों का उत्पादन घटा है। इसके साथ ही पुरानी फसलों जैसे–अंगोरा, तिल, राडा, सरसों, भंगजीरा का उत्पादन बहुत कम हो गया है। जंगली पक्षी तथा उक्सा (कुरमुला), ध्वाड़ा (दीमक) फसल को नुकसान पहुँचा रहे हैं। चयनित गाँवों में अधिकतर लोगों का व्यवसाय दुग्ध–पालन है। गाँव ग्वाड़ में पानी की उपलब्धता अच्छी है। इससे लोगों को फसल तथा सब्जी उत्पादन व दूध व्यवसाय के काम में सफलता मिलती है।

गाँव में पहले दो बड़े पॉलीहाउस बने थे। इनमें सब्जी तथा पौध का उत्पादन हो रहा था तथा बैमौसमी सब्जी भी मिल रही थी। यह देख कर ग्रामीणों द्वारा यह सुझाव आया कि सब्जी उत्पादन को बढ़ावा मिले। रूचि रखने वाले परिवारों के साथ ही भूमि उपलब्ध होने वाले परिवारों का ग्रामीणों ने चयन किया। पॉलीहाउस से लोगों को बैमोसमी सब्जी मिल रही है, इससे पोषण तथा कुछ आमदनी बढ़ी है।

चयनित गाँवों में महिलाएं तथा अन्य लोग आपस में सहयोग करते हैं, सहभागिता निभाते हैं। तथापि निरन्तरता बनाये रखने के लिए छोटी–छोटी गतिविधियाँ होनी जरूरी हैं।

जंगलों में महिलाओं के गिरने की घटनाएं बढ़ रही है। परिवारों में बकरियों का पालन पहले से कम है। ग्रामीणों ने बताया कि जब बीमारी आती है तो अनेक बकरियाँ मर जाती है। गर्मियों में बुग्यालों में भी अनेक बकरियाँ मरती हैं। गाँवों में लड़कियाँ मजबूरी से ही सही, घर तथा जंगल का कार्य करती हैं। बहुत कम लड़कियाँ घर के कार्यों में सहयोग नहीं देती। गंगोलगाँव में युवक दूध बेच कर स्वरोजगार करते हैं। परिवार के सभी लोग गाय–भैंसों को घास देना, पानी पिलाना तथा अन्य कार्यों में सहयोग करते है। इस अध्ययन से संस्था की टीम तथा गाँव में सभी लोगों का शिक्षण हुआ।

ग्राम वन

कैलाश पुष्पवाण

किमाणा एवं ब्योलदा क्षेत्र में गाँवों के वन में भ्रमण करने से पता चला कि अधिकतर पेड़ बीस–तीस वर्ष की उम्र के हैं। पेड़ों के वितानों का आच्छादन देखा। नयी झाड़ियों का आच्छादन बहुत कम है। नये पेड़ों की घुसपैठ हो चुकी है, जिसमें चीड़ मुख्य है। स्थानीय घास की जगह कालाबांसा, गाजर घास और लेन्टाना फैल रहा है। खरपतवारों के कारण फर्न, जो कि बाँज के पेड़ के नीचे नमी लाता और उगता था, खत्म होने के कगार पर है।

जंगली कन्दमूल फल, हिसालू, घिंघारू और किल्मोड़ा बहुत ही कम पाये गये। यह जंगली जानवरों का आहार भी है। आज से दस–पन्द्रह वर्ष पहले जंगल में सूखी पत्तियाँ और मिट्टी की मोटी परत रहती थी, अब नहीं मिली। अब जंगलों में आग लग जाती है। पहले से जंगल में तेडू, गीठी, लेगुड़ा, कण्डाली आदि प्रचूर मात्रा में मिलता था पर अब बहुत कम हो चुका है।

पहले अधिकतर ग्रामीण स्थानीय स्रोतों से पानी भरते थे, अब हर घर में नल आ चुके हैं। इस कारण सिर्फ पानी के पाइप टूटने एवं गर्मियों में स्रोतों पर निर्भरता रहती है। पेयजल स्रोतों में रिपेयर (सीमेण्ट का फर्श) करने से पानी रिस जाता है, यह बात ग्रामीणों के साझे अनुभव से मालुम हुई। पेयजल स्रोतों में पानी की मात्रा पहले की तुलना में कम हो गयी है। इसके मुख्य कारण हैं, स्रोत के ऊपरी भाग में पेड़–पौधों की संख्या का कम होना, समय पर वर्षा न होना, भूकंप, देखरेख एवं स्वच्छता का अभाव इत्यादि।

पहले की तुलना में मडुवा, चौलाई, झंगोरा, कोंणी आदि फसलों का उत्पादन बहुत कम हो गया है। ग्रामवासियों से पूछने पर पता चला कि पहले वर्षा समय पर हो जाती थी। अब बर्फ भी कम पड़ती है। पहाड़ी एवं लोकल बीजों की मात्रा में कमी आई है। खेतों में पहले की तुलना में गोबर–खाद का सिर्फ पचास प्रतिशत ही पड़ता है। गाँवों में पशुपालन सीमित हुआ है। प्रति परिवार जोत–भूमि कम होने से भी रूचि कम हुई है। बन्दर, लंगूर, सुअर, साही एवं आवारा पशु ज्वलंत समस्या के रूप में सामने आये हैं। खेतों में बाहरी प्रजातियों की घुसपैठ हुई है, इस में कालाबांसा मुख्य है। जबकि घेर–बाड़ में उपयोगी कटीले पौधे किल्मोड़ा आदि समाप्ति की ओर हैं।

जंगल एवं खेतों से हरी पत्ती वाले पेड़ जैसे भीमल, खड़ीक, तिमला, छछंरी, बेडू आदि

से अच्छा चारा मिलता था परन्तु अब इस में कमी आई है। चारे की कमी के कारण ग्रामीणों ने भैंस एवं बैल पालन बहुत ही कम, लगभग सीमित, कर दिया है। सिर्फ दूध के लिए ही जानवरों को पाला जाता है। भेड़–बकरियों की संख्या भी कम हुई है।

ग्रामवासियों ने बताया कि वर्ष 1997 में ऊखीमठ क्षेत्र में भूस्खलन से बहुत अधिक हानि हुई थी। उस समय ऊखीमठ क्षेत्र में 105 से अधिक जानें गई (एक पूरा गाँव मलबे के अन्दर दबा), कई हेक्टेयर भूमि नष्ट हुई। वर्ष 2000 में किमाणा गाँव में भूस्खलन से पाँच घर एवं दो गोशालाएं नष्ट हुईं। तीन व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हुए एवं दस पशु मरे। वर्ष 2012 की आपदा में किमाणा में भयंकर भूस्खलन के कारण पाँच परिवारों के घर टूटे एवं पन्द्रह लोगों की मृत्यु हुई। मंगोली और चुन्नी तथा सेमला गाँव में भारी नुकसान हुआ। साथ ही, निकटवर्ती सभी गाँवों में भारी जन एवं धन हानि हुई। अनियमित वर्षा एवं तीव्र वर्षा का होना, समय पर वर्षा का न होना, अधिक गर्मी, अधिक पाला, ओले अधिक गिरना आदि घटनाएं जलवायु परिवर्तन की तरफ इशारा करती हैं।

खेतों में गीला गोबर डालने से कुरमुला ही नहीं वरन सुअर भी आ रहा है। मित्र कीट जैसे मधुमक्खी के पालन में बहुत कमी हुई है। तितली, गौरेया, मैना आदि पक्षियों की संख्या भी कम हुई है। घरों में लकड़ियों एवं मिट्टी पर दीमक का प्रभाव बढ़ गया है, ऐसा ग्रामवासियों ने बताया।

दारू नी पेण

इन्दु डिमरी

हे दिदा, हे भुला दारू नी पेण, भगवान की दिई जिन्दगी सुधि नी खोण

भगवान सोचि त्वेते मनखी बणोलू, ये दुनिया मा जेकि नाम कमोलू

दारू पी के नाली उन्द पड़ो तू रोन्दू, हका जनम मा तू कीड़ू ही बणलू

दारू पीके मनखी क्यूं हैवान व्हे जान्दू, त्वे देखी ते तेरा माँ बाप कू मुण्ड उन्द ह्वे जान्दु

बिन दारू कू हे दिदा कन स्वाणू लगणू, दारू पीके हे दिदा जन कार्टून दिखणू

दारू पीके तेरा गिवा मा वे लार छूटणू, त्वे देखी के तेरा नौना मुखड़ी च लुकणू

हे दिदा, हे भुला दारू नी पेण, सुण दीदी सुण भूलि मेरी ये बात

डाली नी काटण, बोटी नी काटण, सोच्याणी आज

मनखी जोन बणि यन जुल्म न कर, चौरासी लाख योनी मा भटकण से डर

मैन त सूणि एक डाली होन्दी दस नौना समान, किले कर दी जाणी बूझी डाली काटण को काम

डाली काटलि त सुखला नौला–गदरा, भोल तेरा आस औलाद त्वेते ही रोला

छोटी डाली काटली भुली बड़ी कख वे होंण, पर्यावरण नी बचलू त्वेन भी जीवन खोण

डाली लगोली मिललू त्वेते शुद्ध हवा पाणी, घुघुती हिलांस भी यन गीत गाली

डाली लगेक करदे भुली धरती कू श्रंगार, सदा अमर रोलू भूली तेरू सुहाग।।

हे दिदा, हे भुला दारू नी पेण, भगवान की दिई जिन्दगी सुधि नी खोण

भगवान सोचि त्वेते मनखी बणोलू, ये दुनिया मा जेकि नाम कमोलू

मानव और वन्य–जीव संघर्ष

बची सिंह बिष्ट

नैनीताल जिला के रामगढ़ ब्लॉक में पाटा गाँव स्थित है। इस की मूल ग्राम–पंचायत सतबूंगा है। सतबूंगा ग्राम–सभा में पाटा, सकार, लोधिया, कफुवा गाँव आते हैं। सतबूंगा का अर्थ है–सात पवित्र चोटियों वाला उपजाऊ भू–भाग।

सतबूंगा में नैनीताल जिले की सबसे बड़ी वन पंचायत है। यह वन पंचायत साढ़े आठ सौ हेक्टेयर के भू–भाग में फैली है। यह स्थानीय निवासियों की पुश्तैनी विरासत है। इस से ईंधन, चारा, कृषि यंत्र, पशुओं के लिए बिछावन आदि की सभी जरूरतें पूरी होती हैं।

वर्तमान में वन पंचायत के सरपंच श्री गंगा सिंह गौड़ हैं। वे पाटा में रहते हैं। इस फल और सब्जी उत्पाक क्षेत्र में सेब, आड़ू, प्लम, नाशपाती के अलावा मटर, गोभी, आलू, बीन्स की फसलें होती हैं।

पाटा के निकट ही गल्ला ग्राम पंचायत स्थित है। गल्ला में डेढ़ सौ हेक्टेयर की वन पंचायत है। गल्ला छोटी और पाटा बड़ी ग्राम सभा है। इसके खेत तथा जंगल की सीमाएं सतबूंगा से मिली हुई हैं। गल्ला फल एवं सब्जी उत्पादक गाँव है। इस क्षेत्र की तीसरी छोटी ग्राम पंचायत लोद है। यह वन पंचायत विहीन है। यहाँ के निवासी गल्ला और पाटा के जंगलों पर निर्भर हैं।

इस क्षेत्र का सबसे बड़ा गाँव सूपी है। जहाँ साढ़े तीन सौ हेक्टेयर वन पंचायत का जंगल है। इस की कुछ सीमा सतबूंगा से मिलती है। सूपी रामगढ़ ब्लाक की सबसे बड़ी ग्राम सभा है। दस से अधिक तोकों में एक इण्टर कॉलेज, चार प्राथमिक विद्यालय, छः आंगनबाड़ी केन्द्र हैं। दो क्षेत्र पंचायत सदस्य चुने गये हैं। सूपी गाँव में अनाज, फल–सब्जी का खूब उत्पादन होता है। सूपी के पास आरक्षित वन क्षेत्र का बड़ा भू–भाग है। इन सभी जंगलों में बाँज, बुरांश, काफल, खरसू समेत चौड़ी पत्ती के पेड़ हैं। चीड़ धीरे–धीरे फैल रहा है। इसके अलावा इन जंगलों में बेशकीमती जड़ी–बूटियाँ पाई जाती हैं।

सामाजिक जीवन के अपने लंबे अनुभवों और पूरे प्रदेश भर में किये गये प्रवास से मुझे यह पता चला कि जंगलों में चीड़ के पेड़ लगातार बढ़ रहे हैं। जंगलों में हर साल आग लगती है। मुख्यतः चीड़ के जंगलों में आग फैलती है। इन जंगलों में वन्य–प्राणियों, पक्षियों, कीटों, मृगों का भोजन एवं प्रजनन के लिए जरूरी वानस्पतिक आवरण खत्म हो चुका है। साथ ही,

चीड़ के जंगल वन्य–प्राणियों के लिए सुरक्षित पनाह–स्थल नहीं हैं।

इन तमाम कारकों के चलते जीव–जन्तु सघन वनों से मानव–बस्तियों में भोजन व पेयजल के लिए आने लगे हैं। धीरे–धीरे उन्होंने यहीं पर अपने लिए रहने की जगह तलाश ली। सघन वनों, नदी–तटों तथा सुरक्षित पनाहों (गुफाओं) में मानव का हस्तक्षेप बढ़ा है। सड़कों, नई बसासतों ने वन्य प्राणियों को असुरक्षित बना दिया है। इससे उत्तराखण्ड में मानव और वन्य–जीव संघर्ष तीव्र हुआ है।

सरकारी संरक्षण की नीतियों ने वन्य प्राणियों के लिए कई सुरक्षित स्थान तैयार किये हैं परन्तु उन के भोजन, जल, प्रजनन और प्रवास की व्यवस्था करने में ये आयोजन निष्फल साबित हुए हैं।

उत्तराखण्ड बनने के बाद ग्रामीणों का शहरों, महानगरों व कस्बों की ओर पलायन बढ़ा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के अवसरों की तलाश बहुत स्वाभाविक कारण रहे हैं। इस कारण 1100 गाँव पूर्णतः जनशून्य तथा 1000 से ज्यादा गाँव लगभग जनहीन बताये जा रहे हैं। खेती को बंदर, सुअर, साही द्वारा बर्बाद कर देने तथा सीमित आबादी में बाघ का आतंक होना भी पलायन के कारण रहे हैं।

सर्वविदित है कि उत्तराखण्ड की अधिकांश भूमि वन–विभाग के पास है। खासतौर पर पर्वतीय क्षेत्रों में खेती की जोतें, बिखरी, असिंचित और खाने–कमाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इस वजह से नकदी कमाने के लिए लोग सदियों से पलायन करते रहे हैं। पहले पलायन पुरूषों द्वारा सीमित समय के लिए होता था। गाँवों में बच्चों के साथ महिलाएं रहती थीं। वे स्वयं मेहनत कर के दूध, अनाज, फल–सब्जियाँ इत्यादि का उत्पादन करती थीं।

विगत वर्षों में पूरे परिवार के साथ शहरों की तरफ पलायन हुआ है। जन–संगठनों, जिम्मेदार नागरिकों ने इस समस्या को सरकार के हर स्तर पर बताने और सुलझाने का प्रयास तो किया किंतु विभागों में मौलिक सोच की कमी, रूढ़िगत निर्णय लेने के तरीकों तथा वैश्विक व्यापारिक दृष्टिकोण की साजिश के चलते ऐसा कोई उपाय नहीं खोज पाये जिससे वन्य प्राणियों के द्वारा हो रहे नुकसान को कम किया जा सकता था।

अनाज उत्पादन करने वाले गाँवों से पलायन अधिक हुआ है। जबकि नदियों के उत्पादक–तटों और फल–सब्जी उत्पादक गाँवों से पलायन कम हुआ है। कुछ वर्षों से वन्य प्राणियों के अतिक्रमण से फल–उत्पादक क्षेत्र के लोग भी परेशान हो चुके हैं। सीमित जोत,

कड़ी मेहनत, बनियों–व्यापारियों के शोषण के कारण आर्थिकी में निरन्तर कमी आयी है, कुपोषण की समस्याएं बढ़ी हैं। जलवायु के बदलते स्वरूप ने बागवानों के जीवन को अवर्षण, सूखा, अतिवर्षा, बीमारियों से बेहाल कर दिया है। सरकारी तंत्र ने खराब सड़कों और मंडी की ध्वस्त व्यवस्था से इन परेशारियों को बढ़ावा दिया है।

वर्ष 2017 में पाटा के ग्रामवासियों ने एक वन–अध्ययन के कार्यक्रम में बताया कि जंगल में लगातार पानी की कमी हो रही है। नये पेड़ों का उत्पादन घट रहा है। जंगलों में खाने योग्य फलदार जंगली पेड़ों, झाड़ियों और कंदों में बहुत कमी आयी है। इस वजह से बगीचों में बन्दर, लंगूर, सुअर इत्यादि नुकसान पहुँचा रहे हैं।

इस से निपटने के लिए समाधानों की तलाश की गई। लोगों ने घरों में कच्चे प्लास्टिक के अस्तर वाले टैंक बनाकर मटर व फलों की खेती से अच्छा लाभ लिया। अन्य गाँवों की तुलना में पाटा में फसल (फल और सब्जी) बहुत अच्छी हुई। उन्होंने मिलकर समस्या के समाधान किये और इन तरीकों पर काम करने का अनुभव भी प्राप्त किया। इसी तरह लोगों ने स्वयं कुरमुला कीट को नियंत्रित करने का तरीका खोजकर उसे अपनाया है।

गाँवों में बातचीत चलती रही। इसी चर्चा से निकला कि क्षेत्र में पाटा गधेरा से ले कर सेलवानी संगम तक बंदर, लंगूर, सुअर आदि जानवर, नौ से अधिक गाँवों की, फसलों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। सबसे मुश्किल तब होती है जब फल पकने शुरू होते हैं। बागवान उसे बेचने की तैयारी में रहते हैं कि अचानक बड़े–बड़े समूहों में बन्दर और लंगूर तथा रात में सुअर आकर फसलों को नुकसान पहुँचा देते हैं।

ग्रामवासियों ने सवाल किया कि क्या उन्हें जंगलों में ही रोकने के लिए कुछ किया जा सकता हैं? उसी बैठक में यह जवाब भी आया कि अगर जानवरों के खाने और पानी का इंतजाम जंगल में ही कर दिया जाये तो संभवतः वे वहीं पर उलझे रहेंगे। तब तक ग्रामवासी क्षेत्रों से फसल काट लेंगे। खाली पड़े बगीचों में खाने को कुछ नहीं मिलेगा तो जानवर जंगलों में वापस चले जायेंगे।

इस बात को लेकर पाटा और गल्ला गाँवों की सामुहिक बैठकों में खूब बातचीत हुई। सभी लोग सहमत हुए कि स्वयं कुछ ठोस काम किया जाना चाहिए। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा को भी यह चर्चा रूचिकर लगी। संस्थान ने हर सम्भव सहयोग देने का भरोसा दिया।

सतबूँगा, (पाटा) व गल्ला वन पंचायत के सरपंचों के साथ मिलकर तीन चरणों में इस काम को क्रियान्वित करने का कार्यक्रम बनाया गया। 1 से 10 अगस्त 2018 को वन पंचायत पाटा, सतबूँगा और गल्ला में पेड़, झाड़ियाँ, कटिंग का रोपण महिलाओं और युवाओं ने आठ टोलियों में बँट कर किया। शहतूत, माजिनी, तुसार, अंगूर, अनार, गुलाब, कनेर, गुड़हल, पद्म, दाड़िम, घिंगारू, चूलू (चुआरू), सदाबहार, पारौ, पैशनफ्रुट, दूदिला, एरण्ड, बेड्डू, जंगली पांगर और बुरांश की पौध लगायी।

इसी बीच एक 29 सदस्यीय युवा टोली ने तीन किलोमीटर तक के क्षेत्र में काला बांसा, लेन्टाना और गाजर घास की झाड़ियाँ उखाड़ कर नष्ट की ताकि अन्य जरूरी पौधे बढ़ सकें। इन लगाये गये पौधों में चारा घास, रेशा, फल की पौध, फलों के बीज, मौन पालन के लिए फूलों की कटिंग, पौध व फलदार झाड़ियों के बीजों का रोपण शामिल रहा। लगभग पन्द्रह हजार पौध, कटिंग और बीज तथा औषधीय पौधों का रोपण एक हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र की खाली टूटी जगहों, पानीदार स्थलों पर किया ताकि वन्य प्राणी वहीं पर भोजन पा सकें। इसकी देखरेख का दायित्व वन पंचायत, महिला संगठन तथा पाँच सदस्यीय कमेटी को सौंपा गया है। पौध, कटिंग, बीज इत्यादि सामग्री स्थानीय पाँच गाँवों से जुटाये गये।

दूसरे चरण में कुल ग्यारह प्राकृतिक जलस्रोतों–चाल खाल को ठीक करने के लिए ग्यारह सदस्यीय कार्यदल का चयन किया गया जो बहते पानी को मिट्टी व पत्थर की चिनाई करके रोक सके। इस तरह लोगों को स्वयं एवं पालतू जानवरों के लिए तथा वन्य प्राणियों को सहजता से वर्ष भर पीने का पानी मिलता रहेगा।

तीसरे चरण में पाँच से सात प्रकार के जंगली कंद जैसे गेठी, तरूड़, वनकेला तथा आड़ू, सेब इत्यादि फलों के बीजू पेड़ वन क्षेत्र में लगाये गये ताकि बंदर और लंगूर बगीचों तक न आ सकें। यदि ये वृक्ष ठीक से पनप जायेंगे तो फिर कुछ वर्षों तक पुनः लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

मानव आबादी बढ़ रही है। जैव–विविधता घट रही है। जंगली जानवरों के प्रवास उजड़ रहे हैं। यदि जंगलों में उनके खाने, पीने और रहने के स्थान सुरक्षित हो जायें तो उनके आक्रमण घटेंगे। जलवायु में बदलाव से ऋतुचक्र में अनेक बदलाव आ रहे हैं। इनसे निपटने के लिए सरल, सहज उपाय गाँव के लोगों द्वारा क्रियान्वित किये जा सकते हैं जो जलवायु परिवर्तन में सबसे जल्दी और अधिक प्रभावित होंगे।

वन्य प्राणियों के लिए सहज अनुकूलन के उपाय करने की सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों की कोई जानकारी आज तक उत्तराखण्ड के गाँवों में नहीं मिली है। हमने अपने संगठनों व गाँव के सीमान्त किसानों, महिलाओं, कमजोर वर्ग के लोगों के बीच से ये उपाय निकाले हैं। उनके साथ मिलकर इन्हें क्रियान्वित किया है। हम इन्हें मिलकर कर रहे हैं। इनके संरक्षण के प्रयास भी साथ–साथ कर रहे हैं ताकि ये भविष्य में पर्वतीय खेती, आजीविका संरक्षण, जलवायु में आ रहे बदलावों से निपटने, मानव एवं वन्य जीव संघर्ष को रोकने में सहभागी जन अभिक्रम का आदर्श उदाहरण बन सकें। संभवतः इससे समाज और सरकार कुछ सीख सकें।

क्षेत्रीय महिला सम्मेलन पाटी

पीताम्बर गहतोड़ी

दिनाँक 2 मार्च 2019 को उत्तराखण्ड सेवा निधि अल्मोड़ा के आर्थिक सहयोग से पाटी जिला चम्पावत में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस में ग्राम हरोड़ी, जनकाण्डे, पारगोसनी, कंडवाल गाँव, धूनाघाट, गरसाड़ी, लखनपुर, तोली, रानीचौड़, जौलाड़ी तथा तोली में सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर रही युवा स्त्रियों सहित एक सौ साठ महिलाओं ने भाग लिया। सम्मेलन में निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की गयी।

1. महिलाओं के अधिकार एवं स्वास्थ्य

2. महिला संगठनों को मजबूत करना

3. अन्य जिलों के महिला संगठनों के कार्यों का स्वरूप एवं गाँव में असर को समझना

4. जंगली जानवरों द्वारा किये जा रहे नुकसान एवं इस से कृषि के प्रति रूचि कम होना

5. क्षेत्र में चल रहे महिला कौशल बढ़ाने के कार्यक्रमों पर लोगों की अधिक सहभागिता

उपरोक्त चर्चा में लखनपुर की देवकी देवी का कहना था कि पहले महिलाओं के प्रति बहुत अत्याचार होता था। आज जमाना बदल गया है। महिलाएं काफी जागरूक हैं। इसी गाँव की शांति देवी का कहना था कि वे प्रशिक्षण के लिये अल्मोड़ा गयी थीं। गढ़वाल क्षेत्र की महिलाओं ने संगठनों में अच्छा काम किया है। हम लोग भी इस तरह के काम कर सकते हैं। पाटी क्षेत्र में कालाबासिंग की बहुत झाड़ियाँ हो गयी है। इसे हटाने की जरूरत है। सेब, आड़ू, खुबानी के पेड़ लगाये जाने चाहिए। जंगली जानवरों से सुरक्षा हेतु तार–बाड़ लगाने की आवश्यकता है। इस से पारम्परिक खेती को बचाया जा सकता है।

अल्मोड़ा से आयी हुई सुश्री रमा जोशी ने 'बोल जमाना बदलेगा' वाला गीत गाया। सभी महिलाएं झूम उठी। रमा जोशी ने बताया कि गाँव में एकता होना बहुत जरूरी है। एकता नहीं होगी तो गाँव कभी आगे नहीं बढ़ सकता। जंगली जानवरों की रोकथाम के लिए भी एकता होना जरूरी है।

ग्राम कमलेख की निर्मला देवी का कहना था कि इस इलाके में आलू बहुत होता था। एक परिवार कम से कम पचास से सौ मन आलू पैदा करता था। आज के समय हम एक बोरी आलू बीज हेतु बाजार से लाये। खेत में लगाने पर सारी फसल सुअरों ने नष्ट कर दी। बीज

की कीमत भी वसूल नहीं हुई, फायदा क्या होता? इस वजह से खेती के प्रति रूचि समाप्त होती जा रही है। उनका कहना था कि क्षेत्र में कम्प्यूटर प्रशिक्षण चलाया जाए। कृषि में हल्दी, अदरक की खेती करना चाहते हैं। इस में सुअरों का आतंक कम होगा।

ग्राम शिक्षण केन्द्र की शिक्षिकाओं रेनू, कृष्णा, श्रीमती गीता, सोनी, गीता तथा संस्था की कार्यकर्त्ता श्रीमती किरन जोशी एवं दुर्गा ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा महिला संगठनों के बारे में बताया। ग्राम शिक्षण केन्द्र के बच्चों की प्रगति के बारे में कहा कि बच्चे कुछ न कुछ सीख रहे हैं। समय का सदुपयोग हो रहा है तथा गाँव का जुड़ाव भी हो रहा है। तत्पश्चात् ग्राम शिक्षण केन्द्र लखनपुर की बबीता आर्या ने 'धन तेरौ पहाड़ा' गाना सुना कर सभी को मोहित कर दिया।

मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड महिला परिषद् की संयोजिका श्रीमती अनुराधा पाण्डे ने अपने सम्बोधन में सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि महिलाओं को अपनी बातें खुल कर संगठन में रखनी चाहिए। पूरे गाँव की महिलाओं को एक साथ जोड़ना जरूरी है। सभी को मजबूती के साथ खड़ा होने की आवश्यकता है। पूरे राज्य में बन्दरों, सुअरों का आतंक है। इसके लिए अपनी तरफ से पूरे गाँव को मिलकर प्रयास करने होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि इस युग में कम्प्यूटर, सिलाई–बिनाई के काम का महत्व बढ़ा है, इसका फायदा लें। आजीविका के नये–नये साधन ढूँढ़ने और उन पर काम करने से महिलाओं को लाभ होगा।

अल्मोड़ा से आये हुए कैलाश पपनै का कहना था कि संगठन एक ऐसा माध्यम है जिससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उनका कहना था कि क्षेत्र में ग्राम शिक्षण केन्द्र खोले गये हैं। किताबें एवं अखबार पढ़कर पूरा फायदा लेना चाहिए। बच्चों को कहानी के माध्यम से सिखाने का प्रयास करना चाहिए। सभी महिलाओं से हमेशा सहयोग करने की बात कही।

ग्राम गरसाड़ी से आये हुए श्री गौरी शंकर जी ने कानून संबंधी जानकारी दी। महिलाओं को हमेशा सहयोग देने की बात कही। संस्था के अध्यक्ष श्री कृष्णानंद गहतोड़ी जी ने अल्मोड़ा से आये हुए अतिथियों एवं क्षेत्र की महिलाओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज के समय में महिलाओं एवं लड़कियों को अपने अधिकारों के प्रति सजग होने की आवश्यकता है। संस्था के निदेशक श्री पीताम्बर गहतोड़ी जी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए जलपान करने का आग्रह किया।

महिला शिक्षण में जो भी जागरूकता की बातें हो रही हैं वे एक मिसाल की तरह हैं। महिलाओं को अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहते हुए छुआछूत एवं हिंसा रोकने की दिशा में काम करना है।

मेरो रातिर

सावित्री आर्या

ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा

स्वर्ग जैसो प्यारो मेरो रातिरे मा

ऐजा ऐजा परिदेशी मेरो रातिरे मा।।

ह्यूरिया क धार बटी देखी छ हुँकरा की भगवती

नान ठूल की माया बनीरू यो मेरो रातिरे मा

बाल छनक कोतिक हुनी यो मेरो रातिरे में

झोड़ा–चाचरी हुनी यो मेरो रातिरे मा।।

ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा

स्वर्ग जैसो प्यारो मेरो रातिरे मा

ऐजा ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा।।

लम्बी दीवार बटी देखि छ रामगंगा नदी

ठण्ड हवा, ठण्डो पाणी मेरो रातिरे मा

गोरू, भैंसा, भेड़, बकारा मेरो रातिरे मा।।

ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा

स्वर्ग जैसो प्यारो मेरो रातिरे मा

ऐजा ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा।।

खयि भईया छिड़ बटी लगनी कुरड़ियाक बुग्याल

आमा, बुबू ग्वारे हि जांन चोमासे क दिनों मा

ढना–धारो भरी रूना हरी–हरी घासो मा

अया दीदी अया भुली यो मेरो रातिरे मा

देवो की भूमि छू या पहाड़ों का बीच मा।।

ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा

स्वर्ग जैसो प्यारो मेरो रातिरे मा

ऐजा ऐजा परदेशी मेरो रातिरे मा।।

महिला संगठन पाटा

राजेश्वरी नयाल (तारा)

दिनाँक 6 जुलाई 2018 को पाटा संगठन की गोष्ठी में महिलाओं ने तय किया कि पूरे गाँव का एक संगठन है। इस में महिला, पुरूष, नवयुवक, बच्चे सभी वृक्षारोपण का कार्य करेंगे। महेश गलिया, बची दा, महेश नयाल भी गोष्ठी में उपस्थित थे। सभी ने तय किया कि महिलाएं 9 अगस्त 2018 को क्रेट, कुदाल तथा वृक्षों की कटिंग लेकर सुबह नौ बजे संगठन की सदस्या श्रीमती हेमा देवी के घर के पास सड़क में इकट्ठा होंगी। वहाँ से छोटी–छोटी टीम बनाकर अलग–अलग तोकों में वृक्षारोपण के लिए जायेंगी।

दिनाँक 9 अगस्त 2018 को सुबह नौ बजे संगठन की सभी महिलाएं इकट्ठा हो गयीं। महिलाएं अपने साथ क्रेट में रख कर वृक्षों की कटिंग लायी थीं। कुछ कटिंग पुरूष भी लाये। गाँव के वन–पंचायत सरपंच श्री गंगा सिंह गौड़ जी के नेतृत्व में एवं श्री महेश गलिया, श्री बची सिंह बिष्ट, श्री महेश नयाल के सहयोग से सभी महिलाएं एवं पुरूष वृक्षारोपण के लिए अलग–अलग तोकों की तरफ रवाना हुए। एक टोली ने अंगूर, अनार, दाड़िम, कनेर, शहतूत, माजिनी, वैस, गुड़हल, घिगांरू का बीज, चुवारू का बीज, बेडू की कटिंग, तुसियारू, पइया आदि के वृक्ष सुरंग तोक में लगाये। दूसरी टोली ने बमेटी तोक में तथा तीसरी टोली ने काटिगैर से मल्ली बमेटी के धूरा तोक में तथा चौथी टोली ने भोड़ा तोक में वृक्ष लगाये।

सभी लोग वृक्ष लगा कर शाम को चार बजे हेमा देवी के घर के पास इकट्ठा हुए। सरपंच जी ने सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की थी। चार टोलियों ने अनुमानित दस हजार से अधिक वृक्ष वन पंचायत में लगाये। सब लोगों का मिलकर वृक्ष लगाना हमें बहुत अच्छा लगा। संगठन के माध्यम से ज्यादा काम कम समय में हो गया और थकान भी महसूस नहीं हुई। जलपान के बाद सभी ने बैठकर दूसरे दिन के कार्यों के बारे में चर्चा की। महिलाओं का कहना था कि कुछ पेड़ लगाने बचे हैं। कुछ अतिरिक्त कटिंगे ला कर दिनाँक 20 अगस्त 2018 को फिर से वृक्षारोपण करेंगे। 20 अगस्त 2018 को पुनः लगभग एक हजार वृक्ष लगाये।

पुनः 26 अगस्त 2018 को पन्द्रह सौ पौधे और पाँच किलोग्राम के लगभग बीज रोपे। ग्रामवासियों ने मिलकर लगभग तीन किलोमीटर के क्षेत्र में खरपतवार का उन्मूलन किया। शाम को बैठक कर के जल संचय, संगठन की एकता और प्रशिक्षण की योजना बनाई। पुनः सुरंग व बमेटी के खाली स्थानों पर पेड़ों का रोपण किया। ये सभी कार्य जनमैत्री संगठन के द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के आर्थिक सहयोग से किये गये।

मैं किसान

हेमा देवी

मैं हेमा देवी, पत्नी श्री नरेश पाल सिंह, ग्राम किमाणा, हिमालयन ग्रामीण विकास संस्था ऊखीमठ के साथ विगत आठ वर्षों से अधिक समय से जुड़ी हूँ। मैं हर माह महिला संगठन की गोष्ठी में प्रतिभाग करती हूँ। संस्था के द्वारा हमें कृषि एवं पर्यावरण संबंधी प्रशिक्षण एवं जानकारी दी जाती है। इसी का फायदा उठाते हुए मैंने ग्राम ब्यूल्दा में महिलाओं को आलू के रोपण की जानकारी दी। यह कार्य मेरे मायके में पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहा है।

हमारे गाँव में किसान सिर्फ गेहूं, धान, मंडुवा, झंगोरा आदि का उत्पादन करते हैं। काफी प्रयासों के बावजूद भी कोई किसान आलू के रोपण के लिए तैयार नहीं था। सभी का मानना था कि यहाँ पर आलू का उत्पादन नहीं हो पायेगा। तत्पश्चात् संस्था के प्रमुख डॉ0 कैलाश पुष्पवान के द्वारा आलू रोपण की विधि एवं उत्पादन संबंधी जानकारी दी गई। मैंने पाँच नाली खेतों में लगभग एक सौ पचास किलोग्राम आलू के बीज का रोपण किया। इस से पाँच सौ किलोग्राम के लगभग आलू प्राप्त हुआ। मैंने पच्चीस रुपया प्रति किलोग्राम के हिसाब से बारह हजार पाँच सौ रुपये की आमदनी करते हुए आजीविका का यह स्रोत बढ़ा लिया।

इस कार्य को करने में मेहनत कम लगी, समय की बचत हुई। यदि मैं इन खेतों में धान या गेहूं का उत्पादन करती तो मात्र पच्चीस सौ या तीन हजार रुपये का फायदा होता। मैं इन पैसों का उपयोग फिर से बीज खरीदने, बच्चों की पढ़ाई एवं अन्य घरेलू कार्यों के लिए करूँगी।

मुझे स्वयं पर गर्व है कि अपने गाँव में आलू उत्पादन करने वाली पहली महिला हूँ। अब इस काम को देखते हुए गाँव में लगभग पन्द्रह से बीस क्विंटल आलू का रोपण किया गया है। जब चारधाम यात्रा चरम पर होगी तब इस सब्जी को अच्छे दामों में दुकानों और होटलों में बेचा जा सकता है।

हम महिलाएं भी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में जुटी हैं। मैं और मेरा परिवार सहयोग के लिए हिमालयन ग्रामीण विकास संस्था तथा उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा का आभार व्यक्त करते हैं।

रिंगाल हस्तशिल्प–प्रशिक्षण कार्यशाला

लक्ष्मी पुष्पवाण

ऊखीमठ क्षेत्र की ग्राम पंचायत हुड्डू के गाँव कर्णधार में चौबीस परिवार निवास करते है। सभी परिवार अत्यंत गरीब एवं अनुसूचित जाति के हैं। गाँव में लोगों के मुख्य व्यवसाय मजदूरी, लघु एवं कुटीर उद्योग है। ग्रामीणों का परम्परागत व्यवसाय, हस्तशिल्प का कार्य, रिंगाल का काम एवं पारंपरिक ढोल–दमाऊ, वाद्ययंत्र बजाना एवं लौहारी करना है। गाँव की महिलाएं मुख्यतः रिंगाल से कण्डे, सोल्टे, मौलखने आदि बनाती हैं। इन्हें बनाने में समय एवं कच्चा माल अधिक लगता है और बाजार में मूल्य बहुत कम मिलता है।

संस्था द्वारा मासिक बैठकों का आयोजन कर के महिलाओं, युवाओं और समस्त ग्रामीणों को नयी–नयी जानकारी दी जाती है। इस बार ग्रामीणों ने कहा कि स्वरोजगार (रिंगाल का कार्य) मुख्य व्यवसाय बन कर आर्थिकी को बढ़ा सकता है। दिनाँक 29.02.2019 को अल्मोड़ा से उत्तराखण्ड महिला परिषद् की अध्यक्षा श्रीमती अनुराधा दीदी उनके साथ सुश्री रमा दीदी ने ग्रामीणों के साथ गोष्ठी का आयोजन करने के बाद ग्राम–भ्रमण किया। ग्रामीणों की स्थिति को जाना। उन्होंने ग्राम शिक्षण केन्द्र में शिक्षिका और बच्चों से भी चर्चा की। गोष्ठी में ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं, ने कहा कि रिंगाल से डिजाइनदार टोकरी, गुलदस्ते, हैट, कुण्डल, क्लिप आदि बनाये जा सकते हैं। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण की जरूरत थी। अनुराधा दीदी ने अल्मोड़ा संस्था में जाकर बात करने के उपरान्त हामी भरी।

सभी ग्रामीणों, पच्चीस से अधिक महिला–पुरूषों, युवकों और युवतियों, ने इस कार्य को दिनाँक दो मार्च से सोलह मार्च 2019 तक पन्द्रह दिवसीय प्रशिक्षण में राज्यस्तरीय प्रशिक्षक श्री प्रेम लाल भारती जी के निर्देशन में सीखा। हम सभी ग्रामीण धीरे–धीरे लगातार कोशिश करते रहेंगे तो इस कार्य में और अधिक निपुणता आयेगी। हमारी आर्थिकी बढ़ सकेगी।

संस्था द्वारा किये जा रहे ग्राम स्तर पर अन्य काम जैसे खाद्य–फल एवं फूल प्रसंस्करण से जूस स्क्वैश, अचार बनाना, सिलाई–बुनाई प्रशिक्षण, बच्चों एवं ग्रामीणों के लिए ग्राम शिक्षण केन्द्र आदि के संचालन से स्थानीय ग्रामवासियों को लाभ हुआ है।

भूमि पर आधारित आजीविका के काम

पीताम्बर गहतोड़ी

हिमालयी अध्ययन मिशन कार्यक्रम के तहत उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा के आर्थिक सहयोग से सात ग्रामों में पर्यावरण संवर्धन एवं आजीविका कार्यक्रम शुरू किया। इन में जोश्यूड़ा, बुंगा, कमलेख, पिपलाटी, पारगोसनी, कण्डवालगाँव, धूनाघाट–कमलेख और लधौन ग्राम शामिल हैं। लधौन एवं धूनाघाट–कमलेख में ग्रामवासियों की रूचि कम होने के कारण अन्य पाँच गाँवों यथा–जोश्यूड़ा, बुंगा, कमलेख, पिपलाटी, पारगोसनी, कण्डवाल में लगातार काम किया। रचनात्मक कार्यक्रमों के तहत मुख्य रूप से जोश्यूड़ा में पानी का संरक्षण किया है। गाँव में पानी की लाइन बनाने से पिपलाटी गाँव के पचास परिवार तथा जोश्यूड़ा, होली गाँवों के छत्तीस परिवारों को लाभ मिला है।

ग्राम बुंगा, कमलेख, पिपलाटी में कई बार गोष्ठियों का आयोजन किया गया। ग्रामवासियों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि ग्राम जोश्यूड़ा में अगर पेयजल की सुविधा होती है तो इस पाइप लाइन से जोश्यूड़ा तथा पिपलाटी में पेयजल आपूर्ति के साथ–साथ बागवानी, कृषि कार्य को बढ़ावा मिलेगा। इस के अतिरिक्त कृषकों की आय बढ़ सकती है।

जोश्यूड़ा की मीटिंग में प्रस्ताव आया कि योजना को दो हिस्सों में किया जाये। एक हिस्से में पर्यावरण संरक्षण समिति पाटी द्वारा व्यय किया जायेगा तथा दूसरे हिस्से में गाँव की वन पंचायत से व्यय किया जा सकता है। जोश्यूड़ा के समस्त ग्रामवासियों द्वारा निर्णय लिया गया। सभी ने प्रस्ताव पर हस्ताक्षर भी किये। गाँव में तीन तोक हैं। इस में जोश्यूड़ा–होली, पिपलाटी, बुंगा–कमलेख तोक शामिल हैं। इन ग्रामों के सामुहिक वन पंचायती खाते में कुछ धन जमा था। सभी ग्रामवासियों ने सुझाव दिया कि तीनों तोकों में बराबर बाँटकर आवश्यकता के अनुसार विकास के कार्य किये जायेंगे। संस्था द्वारा ग्राम जोश्यूड़ा में आवश्यकता के अनुरूप पेयजल व्यवस्था का प्रस्ताव रखा गया। पानी आ जाने पर सब्जी उत्पादन के साथ–साथ बागवानी, कृषि आदि को बढ़ावा देकर आय बढ़ाई जायेगी, यह निर्णय भी हुआ। इस में ग्राम जोश्यूड़ा में पाइप लाइन बिछाने, खुदाई, स्रोत के कार्य हेतु कुछ धनराशि देने का निर्णय लिया। ग्राम बुंगा–कमलेख में वन पंचायत के निवासियों ने पैसे को खर्च करने पर आपत्ति कर दी। जबकि संस्था के द्वारा पाइप, यूनियन, सॉकेट आदि हल्द्वानी मार्केट से उपलब्ध करा दिये गये थे। ग्रामवासियों की आपत्ति जारी रही।

संस्था के द्वारा पुनः बुंगा–कमलेख के बुद्धिजीवियों के साथ गोष्ठी की गयी। गोष्ठी में

विस्तृत चर्चा हुई तथापि कुछ लोग अपनी बात पर अड़े रहे। तत्पश्चात् संस्था ने ग्राम जोश्यूड़ा के निवासियों के साथ गोष्ठी की। ग्राम के सरपंच जी ने यह बात सामने रखी कि योजना को अभी व्यक्तिगत रूप से चन्दा करके पूरा किया जाये। सभी लोगों के सहयोग से पाइप लाइन का कार्य पूरा हो गया। गाँव में नियमित पानी आने लगा। ग्राम जोश्यूड़ा, होली और पिपलाटी में जो खींचतान होती थी, बन्द हो गयी। गाँवों में झगड़ों का भी अंत हो गया। इस प्रकार के काम से सीख भी मिली। पानी की योजना हो जाने से सब्जी उत्पादन, बागवानी आदि में मदद मिलेगी। ग्रामवासी आय बढ़ायेंगे तथा पलायन भी कम होगा।

अन्य ग्रामों जैसे–पिपलाटी, बुंगा, कमलेख, लधौन, कडवालगाँव में फलदार वृक्षों का रोपण तथा पारगोसनी में सब्जी उत्पादन के साथ–साथ फलदार पेड़ों के रोपण का कार्य हुआ। गाँव की गोष्ठियों में यह भी सुझाव आया कि प्रत्येक गाँव में सेब, प्लम, आड़ू के पेड़ दिये जायेंगे। तय हुआ कि जो परिवार एक मीटर का गढ्ढा बनाकर उस में गोबर डालकर दिखायेगा, उसी को पौधे दिये जायेंगे। प्रसन्नता की बात यह है कि सभी गाँवों में लोगों ने गढ्ढा तैयार कर के संस्था कार्यकर्त्ताओं को दिखाया और पौधे लगाये। इस में तीन सौ पौधे कीवी, जो कि निगलाट भवाली से लाये गये, तथा बारह सौ पचास पौधे सेब, आड़ू, प्लम सूपी गल्ला गाँव रामगढ़ जिला नैनीताल से लाकर ग्रामवासियों को अलग–अलग पेड़ों के हिसाब से बण्डल बनाकर वितरित किये। सभी ग्रामवासियों ने मनोयोग से पौधों को लगाया। इस कार्य में ग्रामवासियों की अच्छी रूचि थी।

जोश्यूड़ा गाँव में छत्तीस परिवारों को चार–चार पौधे कीवी तथा चार–चार पौधे आड़ू और सेब के कुल आठ पौधे दिये गये। ग्राम में निरंतर गोष्ठियाँ की गईं।

बूंगा–कमलेख में अस्सी परिवारों को छः–छः पेड़ सेब, आड़ू, प्लम तथा दस परिवारों को चार–चार पौधे कीवी के उपलब्ध कराये। ग्राम पीपलाटी में चालीस परिवारों को चार–चार पेड़ सेब, प्लम, खुबानी, आड़ू आदि के पौधे दिये गये। कंडवाल गाँव में छत्तीस परिवारों को छः–छः पेड़ सेब, आड़ू, प्लम के दिये तथा कुछ परिवारों को कीवी के पौधे भी उपलब्ध कराये। पारगोसनी में आठ–आठ पौधे सेब, प्लम, आड़ू के दिये गये तथा दो परिवारों को कीवी के पौधे भी उपलब्ध कराये। इस गाँव में कुल चालीस परिवार हैं। सभी परिवारों ने आलू के उत्पादन के साथ–साथ टमाटर, गोभी तथा बैंगन के पौधे लगाये। ग्राम लधौन में लगभग पचास परिवार रहते हैं। इस में से पन्द्रह परिवारों ने सेब, आड़ू, प्लम के पौधे लगाये। अन्य परिवारों का पेड़ों के प्रति लगाव नहीं था। धूनाघाट और कमलेख गाँवों में भी पौधों का वितरण किया। लोगों की रूचि कम होने के कारण कम पौधे उपलब्ध कराये। जिन परिवारों की रूचि थी उन्हें ही

शामिल किया।

रचनात्मक कार्यों के प्रति ग्रामवासियों की रूचि अच्छी है। गौसम में बदलाव को देखते हुए लोग गंभीर हैं। जंगली जानवरों के कारण लोग परेशान हैं। अनावश्यक मौसम परिवर्तन से कृषि एवं बागवानी में प्रतिकूल प्रभाव हुआ है। गाँवों में लोग गधेरे, नौले, धारे एवं उनके आस–पास स्वच्छता बनाये रखने के लिए लगातार प्रयासरत हैं।

ग्राम परितंत्र की समझ

जब संस्था के सदस्यों को जंगल, पानी, ग्राम भूमि और जानवरों के आपसी तालमेल को गहराई से देखने का अनुभव हुआ तो नये सिरे से गाँवों को देखने की दृष्टि भी मिली। तीनों ग्रामों–पीपलाटी, पारगोसनी, कण्डवाल गाँव से ऐसी अनेक बातें मालुम हुई जो सरकारी तौर पर योजनाएं चलाने से पता ही नहीं चल पाती हैं।

वर्तमान में जंगलों की स्थिति खराब है। संस्था ने क्षेत्र में एक छोटा सा जंगल बनाया था जो कि एक प्रेरणा के रूप में है। इसे देखकर अन्य लोगों की समझ बढ़ी है कि नया जंगल बनाया जा सकता है। तथापि क्षेत्र में बाँज के जंगल कम हो रहे हैं और चीड़ के वृक्ष फैल रहे हैं। पानी के सभी प्राकृतिक स्रोत सूख रहे हैं। वन आवरण का समाप्त होना, मौसम में परिवर्तन इस के कारण हो सकते है। इस वजह से वन्य–प्राणियों और जंगल की वनस्पति को पानी नहीं मिल रहा। वन पंचायतों के साथ पानी का संरक्षण भी करना चाहिए।

जंगली जानवरों के डर से लोग खेती छोड़ रहे हैं। खेती में मडुवा, मक्का, गेहूं, आलू, मिर्च, लहसुन, अदरक, हल्दी आदि का उत्पादन होता था। जंगली जानवरों के डर से लोग ये सभी कार्य छोड़ते जा रहे हैं। अगर जंगल में बकोर, मेहल, तरूड़, कन्दमूल, फलदार पौधों का रोपण किया जाय तो जानवर वहीं पर रूकेंगे तथा कृषि के प्रति लोगों की रूचि बढ़ेगी। पशुपालन में लोगों ने अधिक दूध के उत्पादन हेतु देशी गायों को छोड़कर जर्सी या अन्य दूधारू पशुओं को पालना शुरू कर दिया है। साथ ही, दुधारू पशु के अलावा अन्य सभी जानवर जंगल में चरने के लिए छोड़ दिये जाते हैं। ये आवारा पशु गाँव में वापस आकर कृषि को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इसके लिए सामुहिक स्थानीय गाय केन्द्र बनाया जा सकता है। बागवानी में सेब, आड़ू, प्लम, कीवी का वृक्षारोपण करना लाभदायक रहेगा।

किराएदार या बकाएदार

कैलाश पपनै

किराएदार होना बुरा तो नहीं है। हर कोई चीज हमारी हो भी नहीं सकती क्योंकि अपना है ही क्या? इन्ही बातों को सोचते हुए एक गीत की दो पंक्तियाँ याद आ रही हैं। ''जिन्दगी एक किराए का घर है, छोड़कर इसको जाना पड़ेगा'' ये तो बात है जिन्दगी की। असल में मैं भी किराएदार बनने के लिए गाँव से शहर में आया हूँ। पलायन शब्द के साथ किराएदार शब्द जुड़ जाता है। लोग पलायन करते हैं, नौकरी के लिए, शिक्षा के लिए, स्वास्थ्य के लिए। दुर्भाग्य यही है कि किसी अन्य शहर–कस्बे में जा कर हम अपनी मालिकाना पहचान खो देते हैं और परोक्ष रूप से जो शब्द हम से जुड़ जाता है, वह है–किराएदार।

अब दोष किसका है? क्या कोई मानेगा कि हमको किराएदार बनने की जरूरत इसलिए पड़ी कि हमारे ऊपर किसी का ध्यान ही नहीं गया। स्वास्थ्य में, पढ़ने में, अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए सुविधाएं देने में न सरकार कारगर हुई और न ही कोई अन्य संस्थान।

कुछ दिन पूर्व पिताजी को दिखाने के लिए अल्मोड़ा बेस अस्पताल तक गया। एक पचास–पच्चपन वर्ष की महिला अपने रिश्तेदार के साथ आयी हुई थी। वह डॉक्टर से बोली, ''डॉक्टर साहब, कुछ भी कर दो पर मुझे ठीक कर दो, एक महीने से यहाँ पड़ी हूँ। क्या करूँ?'' उस महिला को मधुमेह की समस्या थी। उसने कहा, ''अभी भी ठीक नहीं हुई तो किराए में कमरा लेना पड़ेगा।'' वह अपना दुखड़ा सुना रही थी। डॉक्टर साहब दिलासा दे रहे थे कि वह जल्द ठीक हो जायेगी।

अधेड़ उम्र की उस महिला के अन्दर एक दर्द था। इस दर्द को आप किसी भी रूप में देखें पर मैं इसे किराए में रहने की विवशता की टीस समझता हूँ। ऐसा ही गाँव में रहने वाला हर व्यक्ति समझता है। पहाड़ के शहरों में हाल में हुई एक घटना मेरे किराएदार होने के दर्द को ज्यादा बढ़ा देती है। इस घटना में सालों से किराए में रह रहे एक व्यक्ति की माँ ने इस वजह से दम तोड़ दिया कि उसके बेटे के शव को घर के अन्दर नहीं लाने दिया गया। बेटे के साथ माँ ने भी प्राण त्याग दिए।

किराएदार बनना इस वजह से भी दर्दनाक है क्यों कि व्यक्ति बिना उधार लिए रोज उधारी या बकाएदारी में रहता है। किसी सज्जन ने मुझ से पूछ लिया कि यह मैं कैसे कहता हूँ

कि हमेशा मुझ पर उधार चढ़ा रहता है, जबकि कोई अन्य उधार नहीं है। मैंने जवाब दिया कि अन्य उधार हो या न हो पर एक माह का किराया देते ही मैं अगले माह का बकाएदार हो जाता हूँ। वे बोले, ''बात तो सही है, सच भी है। माह के अंत में पैसा देने के बाद भी अगले माह के लिए बकाएदार ही हुए।''

दिल्ली जैसे महानगर में तो किराए के लिए कमरा ढूंढ़ने जाना भी बड़ी ही दिलचस्प प्रक्रिया है। आप ने किस प्रकार के कपड़े पहने हैं, इस से शुरू होती है किरायेदार बनने की कहानी। मकान मालिक पहाड़ी ही क्यों न हो पर इन्टरव्यू तो ऐसे लेगा मानो सिविल सेवा की परीक्षा के लिए चुनाव होना है। कहाँ के रहने वाले हो, क्या करते हो, जाति क्या है, सिगरेट शराब तो नहीं पियोगे आदि जवाबों को सुनते हुए घर के अन्दर बैठी उनकी धर्मपत्नी किरायेदार की औकात के अनुसार वाले कमरे की चाभी खोज रही होती है।

मैं भी एक कमरा देखने गया। ज्यों ही ताला खोला, कमरा खत्म। वे बोले, ''पसन्द आया?'' सच मानो, आदमी तो छोड़ो, घर में पालतू जानवरों को सुलाने की जगह भी शायद उससे ज्यादा होती है। पर क्या करें? कमी तो हमारी ही है। किराएदार जो ठहरे। कभी ये भी सोचता हूँ कि अगर मैं भी मकान मालिक बन जाऊँ तो क्या ऐसा ही करूँगा? शायद हाँ, मालिक तो मालिक ही है। गर्मी की छुट्टियों में जब हमउम्र लोग गाँव में आते हैं तो दो–तीन दिन तो मकान मालिकों की बातचीत में ही कट जाते हैं। कब किसके घर में पानी बन्द किया, कब लाइट काट दी। छुट्टियाँ कब कट जाती हैं, पता नहीं चलता। मजे की बात है कि शहर के स्टेट्स से किराएदार की तुलना होती है और मकान मालिक की भी।

अब अल्मोड़ा को ही ले लो। पहाड़ की संस्कृति के हिसाब से मकान मालिक चाहे कितने ही कठोर क्यों न हों, नर्म दिल बन ही जाते है। नैनीताल का क्या कहना? पर्यटक नगरी जो है। हल्द्वानी तक शायद थोड़ा पहाड़ीपन, अपनापन बरकरार है। दिल्ली तो पूछो मत। जितनी मौसम में गर्मी है उतनी ही ऊष्मा मकान मालिकों में भी है। दूर के रिश्ते के एक भाई ने बहुत साल तक किराए में रहने के बाद पाइ–पाइ जोड़कर मकान मालिकों की लिस्ट में आने का ख्याल बना लिया। यह बात उन की मकान मालकिन को नागवार गजरी। धीरे–धीरे सबसे अच्छा किराएदार उनकी आँखों में चुभने लगा। आँखें कहने लगीं आखिर तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमारी बराबरी करने की? फिर क्या था? उन्होंने घर छोड़कर जाने का फरमान जारी कर दिया। मकान बनने के एक माह पहले ही भाई कमरा छोड़ने को मजबूर हुए।

मालिक तो मालिक ही है। पर क्या करें? अब मालिक और किराएदार की समस्याएं तो बढ़ती ही जायेंगी, सामाजिक ताने–बाने गाँव तक ही बने रहते हैं। शहर के उन तंग किराए के

मकानों में न बन सकते है और न ही बनने दिए जाते है। बनें भी क्यों? खून–पसीने से जो बनाए है मकान–मालिकों ने अपने घर। गाँव में मेरा घर तो दादा की देन थी। फिर पिता ने संजोकर रखा। मैंने क्या किया? बस चूना ही लगाया होगा। जब तक वहाँ रहता था। सोचता हूँ कि काश रोज घर जा सकता। रोज वहीं से काम करने आ सकता। अपने घर को देखता और वह मुझे। पर कैसे?

दिनाँक 24–07–2019 को अमर उजाला में एक खबर पढ़ना दिलचस्प लगा कि इटली की सरकार गाँवों को आबाद कर रही है। गाँव में जो लोग रहेंगे उन्हें सरकार धन देगी। एक नया शहर बसाने से अच्छा है कि गाँवों को फिर से आबाद हो जाने दें। लेकिन सिर्फ पैसा दे कर कुछ नहीं होगा। जरूरत है उन गाँवों में पुनः जीवन्तता लाने की। ऐसा तभी होगा जब गाँव अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर होंगे। सरकारें, स्वास्थ्य, रोजगार, शिक्षा जैसी जरूरतों पर गहन विचार करेंगी, तब कहीं यह कार्य स्वीकार्य और व्यवहारिक बन सकेगा।

पलायन करना बुरा नहीं है। इतिहास उठाकर देखें तो बिना बाहर निकले, बिना घूमे, किसी नये कार्य का, नये विचार का आगमन नहीं होता। परन्तु अगर केवल होड़ में या दिक्कतों के कारण पलायन हो तो यह ठीक नहीं। गाँव के लोगों, बुजुर्गों ने, समझा था कि गाँव तक रोड का बनना यहाँ से बाहर गये व्यक्तियों को वापस लेकर आयेगा परन्तु यह रास्ता केवल गाँव से बाहर जाने का माध्यम बन कर रह गया है।

अब आप कहेंगे कि इन सब बातों में मूल भाव ''किराएदार'' कहीं खो सा गया है। ये सड़कें हमें किराएदार ही बना रही हैं। उम्मीद है की किरायेदार बने युवा फिर गाँव की ओर वापस आकर मालिकाना हक प्राप्त करेंगे। फिर से हम स्वतंत्र विचरण करने वाले पक्षी बनेंगे–जो जाता अपनी मर्जी से और आता भी अपनी मर्जी से है।

अब बात यह है कि किस प्रकार आवाज बुलन्द करके अपने गाँव समाज के लिए सरकार से हक माँगा जाय? मैं किराएदार बनना नहीं चाहता। कुछ और करना चाहता हूँ, अपने गाँव के आस–पास। गाँव आज मेरा अतीत बनने को तैयार है पर मैं चाहता हूँ कि वह मेरा साथ वर्तमान बनकर चले। मैं घर में काम करने के लिए स्वतंत्र हो पाऊँ। सरकारें चेतेंगी तो यह संभव है कि कुछ ऐसा काम हो जो गाँव में रहने वाला व्यक्ति कर सके। खेती के लिए कुछ नए कदम उठाये जा सकें। जंगली जानवरों से खेती में हो रहे नुकसान को कम किया जा सके। शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकताओं पर सरकार का ध्यान जायेगा तो फिर से गाँव खुशहाल बन सकेंगे।

घुघुति त्यार

केदार सिंह कोरंगा

उत्तराखण्ड में माघ महीने के एक गते को मकर संक्रान्ति के दिन घुघुति का त्यार (त्यौहार) मनाया जाता है। इस दिन बच्चों की बहार होती है। गेहूँ के आटे को गुड़ के पाग के साथ गूँथ कर घुघुते बनाये जाते हैं। इसी के साथ डमरू, हुड़के, ढाल, तलवार आदि आकृतियाँ बनायी जाती हैं। इन्हें दिन में धूप में सुखा लिया जाता है। शाम को गर्म–गर्म तेल में घुघुते पकाये जाते है। इस त्यौहार में तरह–तरह के पकवान बनाये जाते हैं। इन पकवानों में पूरी, हलुवा, बड़ा, पुआ आदि प्रमुख हैं। इसके पश्चात घुघुतों की मालाएं बनायी जाती हैं। जो लड़के, लड़कियाँ देश–परदेश गये हैं उनके तथा नाती–नातिनों के लिए घुघुते संभाल कर रखे जाते हैं। शादीशुदा लड़कियों के बच्चों के लिए भी माला बनाने का अपना आनन्द है। परिवार के सयाने सदस्य मालाएं बनाते है। उत्साह से भरे बच्चे अपने लिए बड़ी–बड़ी मालाएं बना कर कौआ बुलाने के लिए रख लेते हैं। सभी लोग खुश होकर त्यौहार मनाते है। माला बनाने से पहले कौवे का हिस्सा रखा जाता है। इस दिन ''घुघुति माला खा ले'' क्यों कहते है?बच्चे कौओं को घुघते क्यों खिलाते हैं?

इस त्यौहार के पीछे एक दंत कथा है। एक चंद्रवंशी राजा कल्याण चंद थे। उनकी रानी की कोई संतान नहीं थी। उन्हें बताया गया कि यदि वे बागेश्वर में बागनाथ जी के दरबार में बच्चे की मनौती माँगे तो उन की मनोकामना अवश्य पूरी होगी। उन्होंने ऐसा ही किया। साल भर के पश्चात् एक सुन्दर पुत्र पैदा हुआ। भगवान बागनाथ जी ने राजा व रानी की प्रार्थना सुन ली थी। राजा ने बच्चे का नाम निर्भयचंद रखा।

राजा व रानी ने बच्चे को एक सुन्दर एवं कीमती हीरे मोती की माला बनाकर पहना दी। बच्चा इसे बहुत पसंद करता था। वह माला के साथ खेलता रहता था। कभी–कभी जब जोर–जोर से रोता तो रानी उसे डराती कि कौवे को बुलाती हूँ। धीरे–धीरे बच्चे ने स्वयं ही कौवों को बुलाना शुरू कर दिया। अब बच्चा माला के साथ–साथ कौओं को भी प्यार करने लगा। धीरे–धीरे बच्चे व कौओं में दोस्ती होने लगी। बच्चे को समय–समय पर अनेक प्रकार के पकवान खाने को दिये जाते थे। बचे हुए पकवान कौओं को मिल जाते। यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। धीरे–धीरे बच्चा बड़ा होने लग। यह सब देखकर राजा के मंत्री को ईर्ष्या हो गई। मंत्री बहुत लोभी था। वह सोचता कि यदि राजा की कोई संतान नहीं होती तो उस के मरने के पश्चात् सारा राजपाट मंत्री का हो जाता। वह बच्चे से ईर्ष्या करने लगा। धीरे–धीरे वह बच्चे को मारने की योजना बनाने लगा। एक दिन बच्चा अकेला ही आँगन में

खेल रहा था। मंत्री ने मौका पाकर बच्चे को उठा लिया तथा घने जंगल की ओर चल पड़ा। कौवे भी बहुत होशियार होते हैं। उन्होंने बच्चे को आँगन में नहीं देखा तो काँव–काँव कर के सभी साथियों को बुला लिया। सभी कौवे बच्चे की खोज में चारों दिशाओं की ओर उड़ गये।

जंगल में कौओं की नजर मंत्री और बच्चे पर पड़ गयी। जोर–जोर से काँव–काँव कर के उन्होंने सारा जंगल हिला दिया। सैकड़ों कौवे जमा हो गये। कौओं ने मंत्री को चोंच मारकर घायल कर दिया। घबरा कर मंत्री ने बच्चे को जमीन में रख दिया। एक कौए ने बच्चे के गले की माला को नोंचकर सीधे राजा के दरबार में पहुँचा दिया। दरबार में हाहाकार मचा था। राजा ने मंत्री को बुलाया किन्तु उसका कही भी पता नहीं था। राजा को मंत्री पर शक हुआ। उसी समय राजा की नजर कौओं के द्वारा लायी गयी माला पर पड़ी।

राजा का शक गहरा हो गया। कौवे जंगल की ओर उड़ चले। राजा ने उनके पीछे–पीछे अपनी सेना भेज दी। आगे–आगे कौवे तथा पीछे–पीछे सेना चल रही थी। चलते–चलते सेना ठीक उस जगह पर पहुँच गयी जहाँ पर बच्चा खड़ा था। सेना ने देखा कि सैकड़ों कौओं ने मंत्री को घेर कर बेहाल कर दिया था। सेना बच्चे और मंत्री को साथ लेकर राज दरबार में लौट आयी। कौए भी साथ आये। वे राज दरबार के चारों तरफ बैठ गये। राजा के आदेश पर मंत्री के टुकड़े–टुकड़े कर कौओं को खिला दिये गये। मंत्री का नाम था घुघुती। राजा ने अनेक प्रकार के पकवान बनवाकर उन हजारों–हजार कौओं को खिलाये। तभी से निर्भय चंद को बचाने के उपलक्ष्य में कौओं को घुघुते बनाकर खिलाये जाते हैं। यह संयोग की बात है कि उस दिन मकर संक्रान्ति थी। सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन था। कहते है कि तभी से यह पर्व चला आ रहा है। घुघुति का पर्व हर वर्ष माघ माह में एक गते मकर संक्रान्ति के दिन मनाया जाता है। आटे के घुघुते बनाकर बच्चे कौओं को घुघुतिया गीत गाकर पकवान खिलाते है।

इस त्यौहार का एक पौराणिक पक्ष भी बताते हैं। इसके मुताबिक श्राद्ध पक्ष में पितरों के तरोतारण के लिए कौओं को बइबलि–भाग देने का विधान है। माना जाता है कि कौओं को दिया गया भाग–बइबलि पितरों को मिलता है। जब सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करता है, तब सूर्य को अर्ध्य और यम को खुश करने के लिए पकवान दिये जाते हैं। इस कारण कौओं को बुलाया जाता है। जो भी कारण रहा हो इस दिन बच्चे बहुत खुश रहते हैं। सुबह–सुबह उठकर, नहा–धोकर चन्दन–पिठ्यां लगाकर वे घुघुतों की माला गले में पहन लेते हैं। जोर–जोर से कौओं को आवाज लगाते हैं और उन्हें घुघुते खिलाते हैं। वास्तव में यह बच्चों का त्यौहार है। पक्षियों को प्यार करो। उन्हें खाना खिलाओ। चिड़ियाँ और बच्चे खुश रहेंगे तो संसार खुश रहेगा। हमारा प्राकृतिक परिवेश संतुलित रहेगा, यही इस पर्व का संदेश है।

फूल–फल प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना

राकेश राणा

हमारे गाँव बंगराली में माल्टा, नींबू, नारंगी एवं जंगल से बुंराश, लेगुड़ा, गिलोय तथा पुदीना प्रचूर मात्रा में होता है। पहले संसाधनों के अभाव में फल एवं फूलों का सही उपयोग एवं उपभोग नहीं हो पाता था।

संस्था द्वारा गाँव में पिछले साल 2017–2018 में तीन बार फूलों–फलों से जूस, स्क्वैश, अचार आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। मुझे यह प्रशिक्षण बहुत लाभकारी लगा। इस के उपरान्त हमने संस्था के माध्यम से उद्यान–विभाग, ऊखीमठ, के सहयोग से सात दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। मेरे गाँव के श्री अनिल जी, श्रीमती हेमा देवी जी और स्वयं मैं एक समूह में काम कर रहे हैं। हमने ग्यारह सौ रुपये में हाथ से जूस निकालने वाली एक मशीन खरीदी। हम अपने गाँव के साथ हुड्डू, कर्णधार, उषाड़ा, दैड़ा, काण्डा, ग्वाड़, दिलणा आदि गाँवों में जाकर ग्रामीणों के लिए जूस, स्क्वैश, अचार आदि बनाते है। साथ ही, दुर्गाधार नाम के स्थान पर एक छोटी प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना की है। हमने जूस का उत्पादन किया एवं अचार बनाया। इस का विवरण निम्नवत् है :

क्रम	विवरण	मात्रा जूस	स्क्वैश	अचार
1	नारंगी	200 लीटर	400 लीटर	–
2	माल्टा	400 लीटर	600 लीटर	–
3	बुरांश	600 लीटर	900 लीटर	–
4	नींबू	150 लीटर	50 लीटर	100 किलोग्राम
5	गिलोय	100 लीटर	20 लीटर	–
6	लेगुड़ा	–	–	80 किलोग्राम
7	पुदीना	120 लीटर	30 लीटर	–
8	गुलाब	40 लीटर	25 लीटर	–

मुझे इस कार्य को करने में औसतन छः हजार रुपया प्रतिमाह का फायदा हुआ। मैंने जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल 2019 में काम किया। केदारनाथ यात्रा में दुकान खोलने के बाद मैं पहाड़ी पेय पदार्थ एवं अन्य सामान बेचूँगा। संस्था का धन्यवाद जिस ने मुझे मार्गदर्शन देकर स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया।

पौधशाला निर्माण

दिगपाल सिंह

क्षेत्र ऊखीमठ में खेती मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। किमाणा गाँव में अधिकतर किसान गेहूं, मडुवा, साटी, झंगोरा, दाल आदि बोते हैं। फसलों को बन्दर एवं सुअर बहुत नुकसान करते हैं। हम साल भर में सिर्फ दो फसल ले पाते हैं। गाँव में पशुओं की संख्या कम होने के कारण खेतों के लिए जैविक खाद की मात्रा कम ही मिलती है। इस का सीधा असर उत्पादन पर होता है।

मैं और मेरा परिवार हिमालयन ग्रामीण विकास संस्था के साथ पिछले सात वर्षों से जुड़े है। हम गोष्ठी, बैठक एवं सम्मेलनों में प्रतिभाग करते हैं। संस्था ने उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से राष्ट्रीय हिमालय अध्ययन मिशन के तहत पहली बार गाँव में साग–सब्जी, मसाले–खाद्य प्रसंस्करण का प्रशिक्षण, पौधरोपण, पौधशाला–निर्माण, मुर्गी–पालन के लिए बाड़े, जन जागरूकता इत्यादि का कार्य किया। मैंने भी इस परियोजना के तहत लाभ अर्जित किया, पौधशाला बनाई। इस पौधशाला में लगभग साढ़े आठ हजार पौध हैं।

क्रम	विवरण पौधशाला निर्माण	पौध संख्या	क्रम	विवरण पौधशाला निर्माण	पौध संख्या
1	बाँज	2500	7	खड़ीक	100
2	बाँस	800	8	शहतूत	500
3	कचनार	300	9	नारंगी	800
4	सुबबूल	500	10	माल्टा	1200
5	डेकन	800	11	नींबू	700
6	भीमल	200	योग		8400

मेरी पौधशाला को देखने वन विभाग से वन दरोगा महोदय भी आये। उन्होंने भी तकनीकी सहायता दी। कहा कि संस्था और आप पर्यावरण संरक्षण के लिए अच्छा कार्य कर रहे हैं, विभाग आपका भरपूर सहयोग करेगा। आज तक हम विभाग के पास जाते थे लेकिन अब विभाग हमारे पास आ रहा है।

आफरों का गाँव लधौन

अनुराधा पाण्डे

जिला चम्पावत की पाटी तहसील से लगभग दस किमी. की दूरी पर कमलेख ग्राम–सभा में एक तोक है लधौन। इस तोक में अनुसूचित जाति के लगभग पचास परिवार रहते है। लगभग बत्तीस परिवारों की आजीविका लोहे के बर्तन, खेती के औजार, मंदिरों–धूनी में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों के सृजन से चलती है। गाँव में कुछ परिवार लकड़ी के बने, मिट्टी से लिपे हुए मकानों में रहते हैं तो कुछ सीमेंट के घरों में। अधिकतर घरों के साथ ही लगे खेतों में टिन की छत वाले तीन तरफ से खुले छोटे–छोटे झोपड़ीनुमा कमरे बने हैं। यहाँ पर आफरों से उठता धुँआ और लगातार ठक्–ठक् की आवाज एकमय हो कर एक समा सा बाँधते हैं। अधिकतर आफरों की छतें पुराने कनस्तरों को काट कर सपाट कर देने और उन्हें आपस में जोड़ने से बनी हैं। रंग–रोगन के अभाव में छतों में छेद ही छेद हैं। इन छेदों से कभी सूरज की पीली धूप अंदर आती है तो कभी बारिश और कभी बर्फ। कुछ लोगों ने छतों में नये टिन डाले हैं लेकिन अधिकतर ''वर्कशाप'' पुराने टिन की छाँव तले सरसब्ज हैं। देवदार और सुरई के ऊँचे पेड़ों के बीच फैली निःशब्द शांति को लोहारों के हथौड़े की चोट ही तोड़ पाती है अन्यथा सारा वातावरण वृक्षों पर पड़ती सूर्य की किरणों से बनते–बिगड़ते बिम्बों और जनमानस के जुड़ते–उजड़ते प्रतिबिम्बों में सिमटा रहता है।

लधौन अनेकानेक घेरों से लिपटा हुआ गाँव है। जाति का घेरा, गरीबी का घेरा, पीढ़ियों के बीच आजीविका के मसलों पर तनातनी का घेरा, स्त्री–पुरूष, समुदाय में रीति–रिवाजों और संबंधों से जुड़ी मान्यताओं का घेरा और भी न जाने कितने घेरे। फिर भी, खेतों में मडुवा–धान की फसलें, गहत–भट्ट की शाखें, टमाटर–मूली, मिर्च, मक्का, ककड़ी–कद्दू से भरी जमीनें और देवदार के पेड़ों से गहरा हरापन लिये हुए जंगल एक किस्म की उन्मुक्तता और प्रकृति के विराट स्वरूप का अहसास कराते हैं। एक ऐसी सजीली सहज उन्मुक्तता जो गाँव के घेरों को तोड़कर बहती है, जमीन से उठ कर आकाश में मिलती है। उन्मुक्तता का यही बोध लोगों को सपने पालने का संबल देता है और जमीन को पा लेने का उछाह भी।

आफर में महिला–पुरूष दोनों काम करते हैं। मुख्यतः स्त्रियों का काम है धौंकनी चला कर आग का उच्च तापमान बनाये रखना। आग में तप कर सुर्ख हुए लाल–गुलाबी लोहे को पुरूष पीट–पीट कर मनचाहे आकार में ढ़ालते हैं। कच्चे लोहे की खरीद फरोख्त और तैयार माल को बेचने का काम पुरूष ही करते रहे हैं, पीढ़ी–दर–पीढ़ी।

अगस्त 2019 के इस माह में जब मैं गाँव में गयी, सभी शिल्पी काम में जुटे हैं। इस बार, 2019 में, पन्द्रह अगस्त को रक्षा–बंधन का पर्व है। देवीधूरा में बग्वाल होगी, मेला लगेगा। गाँववासी तैयार सामान को बेचने देवीधूरा ले जाते हैं–हर साल। महेश राम कहते हैं, ''पहले बाबू के साथ जाता था, जब छोटा था। अब अपने बेटे को साथ ले जाता हूँ। भाई भी जायेगा। सामान बिकेगा। फिर मेला भी देखना ही हुआ। पीढ़ियों से ये मेला देख रहे हैं हम।''

आफरों में नयी–नयी दरातियाँ–कुटले आकार ले रहे हैं। कहीं लाल तपे लोहे को पीट–पीट कर तवा–कड़ाही बन रही है, कहीं धूनी के लिए त्रिशूल। जितना बड़ा बर्तन उतनी जोर की चोट। सामुहिक अवसरों में काम आने वाले तौले बनाते वक्त चार–पाँच आदमी मिलकर सरासर लोहे को पीटते जा रहे हैं। एक अन्य आफर में बड़ा दाडू (करछुल) बन रहा है। इस का एक सिरा पत्नी भागीरथी ने पकड़ा है। वह लोहे को निहाई या ऐन (लाल तपे लोहे को रखने का स्थान) पर रखती है। पति श्री भवान राम, उसे पीट–पीट कर आकार देते जाते हैं। ज्यों ही लोहा ठंडा होने लगे, वे उसे फिर से आग में डाल देते हैं, जब तक वह सूर्ख लाल नहीं हो जाता। आग जलाने के लिए चीड़ की छाल (बगेट) का प्रयोग होता है। श्री श्याम लाल कहते हैं, ''बगेट लाना भी मुश्किल हो रहा अब। वन–विभाग वाले मना करते हैं। फिर भी आग तो चाहिये। लोहा तपेगा नहीं, बिकेगा नहीं तो खर्चा कैसे चलेगा?''

एक अन्य कारीगर का बेटा कॉलेज में पढ़ाई कर रहा है, कम्प्यूटर का कोर्स भी। पहले डिग्री कॉलेज लोहाघाट में ही था पर अब पाटी में भी एक डिग्री कॉलेज खुल गया है। ''क्या आफर में काम करोगे आगे?तुम्हारे दादाजी ने किया, माँ–पिताजी भी ये काम कर रहे हैं।'' पूछने पर बेटा हड़बड़ा जाता है, ''पता नहीं। देखेंगे, क्या होता है।'' माँ कहती है, ''कहीं नौकरी में लग जाता, किसी कम्पनी में ही चला जाता।'' तो क्या आफर बंद हो जायेगा? ''हाँ, जब तक हम हैं, तभी तक है ये आफर–साफर। बच्चे कहाँ करेंगे?'' बातों का सिलसिला चल पड़ता है।

खेतों में थोड़ा नीचे उतर कर एक अन्य आफर दिखायी देता है। श्री दलीप राम का बेटा मुकेश उन्हीं के साथ काम कर रहा है। वे बार–बार पूछते हैं, ''क्या करोगे हमारे लिये?खाली ऐसे तो नहीं आये होगे, कुछ तो बात होगी।'' वे मस्तमौला बुजुर्ग हैं। खूब हँसी–मजाक करते हैं लेकिन काम से जरा भी जी नहीं चुराते। हँसी–मजाक में मानवीय सहृदयता झलकती है। ''ट्रांसपोर्ट से कच्चा माल आ जाता है, खटीमा से। उसी से चलता है सारा काम,'' आनन्द राम बताते हैं। ''गाँव में सभी परिवार ट्रांसपोर्ट से लोहा नहीं मँगाते। कुछ गरीब परिवार स्वयं जाते हैं किच्छा, खटीमा तक।'' ''खुद कच्चा माल लाने से सस्ता पड़ जाता है। माल क्या हुआ, लोहे की संकरी चादरें ठैरी। उनको काट कर बर्तन बनाने हुए।''

एक अन्य आफर के मालिक शंकर राम कहते हैं, ''परिवार में श्राद्ध है। इस कारण तीन दिन से काम बंद किया है।'' वे गाँधीजी के विचारों से प्रभावित है। तैयार सामान को जैंती की एक दुकान में देते हैं। ''अब नौजवान इस काम को करना नहीं चाहते। पहली पीढ़ी के कामगार भी कह रहे हैं कि इस काम में फायदा नहीं है।'' यह सुन कर वे उत्तेजित हो जाते हैं। ''काम करने से होता है फायदा। अगर फायदा नहीं होता तो लोग इस काम को करते क्यों रहते? छोड़ नहीं देते?देखो, ऐसा है कि अगर हम दस दिन काम करेंगे, बीस दिन बैठ कर खाने की सोचेंगे तो कैसे चलेगा? बैठो मत, काम करो। मेरे पैर का आपरेशन हुआ है, उम्र भी अब अस्सी हो जायेगी। मैं रोज काम करता हूँ। अब आज के जमाने में लड़कों को कहीं जाना है, मोबाइल रिचार्ज करना है, टी. वी. है, कपड़े नये जमाने के हैं। कहाँ से आयेगा पैसा? कभी लोहाघाट, कभी चंपावत तो कभी पाटी में घूमने–फिरने से तो कमाई नहीं होगी। ये ठीक है कि देवीधूरा मेले में जाओ, उत्तरायणी मेले में बागेश्वर जाओ। अल्मोड़ा की दुकानों में सामान रखो, वहाँ जा कर देखो भी। तब होगा फायदा।''

श्री नवीन राम कहते हैं ''अल्मोड़ा, धारानौला में जो बड़ी दुकानें हैं, वहाँ हम ही देते हैं सामान। हाथ से बने बर्तनों की माँग भी है आजकल।''

लधौन गाँव के निवासी परम्परावादी हैं और परम्परा–विवादी भी। वे आफर से चलने वाली परम्परा के औचित्य पर वाद–विवाद करते तो हैं, तथापि कहीं पृष्ठभूमि में आफर एक संबल के रूप में खड़ा रहता है। ''अगर बाहर कुछ काम नहीं मिला तो आफर का काम ठैरा ही। इसी परम्परा को आगे बढ़ायेंगे। कहीं बाहर काम मिल गया तो बच्चों को ले कर वहीं रहेंगे। कब तक चलेगा आफर से खर्चा?''

गाँव की पगडंडियों के दोनों तरफ नाशपाती और मेहल से भरी हुई बोरियाँ रखी हुई हैं। कुछ पेड़ फलों के भार से झुक–झुक जा रहे हैं। कुछ पेड़ों से फल तोड़ा जा रहा है। उत्पादन ऐसा कि एक–एक फल तोड़ कर सहेजने की जगह लोग पेड़ की शाखों को हिला–हिला कर नाशपतियाँ गिरा रहे हैं। बद्–बद् की आवाज के साथ नाशपतियाँ खेत में बिछ सी गयी हैं। कच्ची–पकी, छोटी–बड़ी, दागी–बिना दाग वाली सभी नाशपतियाँ उठा कर बोरों में भर दी जाती हैं। तराई–भाबर से ट्रकों का आना–जाना लगा है। सस्ती दरों पर व्यापारी फल उठा रहे हैं। काश्तकारों के हाथ में अत्यंत मामूली दाम आता है, बाकी सब ''मार्केटिंग'' के जाल में फँसा हुआ है। ग्रामवासी थके हैं, निढ़ाल हैं। फिर भी, मन में आस है, उत्साह भी। अभी–अभी लोकसभा के चुनाव हुए। अब पंचायतों के चुनाव होंगे। प्रचार होगा। हथौड़े चलाने वाले इन निढाल हाथों के दिन भी कभी बहुरेंगे, यही उम्मीद है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, उत्तराखण्ड की जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा के ढाँचे से अलग एक वैकल्पिक विकास की व्यवस्था और उसके क्रियान्वयन के तौर–तरीके को विकसित किया है। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम राज्य भर में फैले हुए ग्राम–स्तरीय संगठनों व स्वैच्छिक संस्थाओं ने संभाला है, जो ग्रामीण इलाकों में परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

यद्यपि उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के गठन एवं कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी परंतु चार सौ पैंसठ महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा बाइस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज से विकास संबंधी समस्याओं को सस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया गया। परिषद् की सदस्याओं में जाति, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। बड़ी संख्या में पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलाएं कभी भी विद्यालय नहीं गयी हैं, परंतु बीस से पचास वर्ष की अधिकतर महिलाएं साक्षर हैं और शिक्षा का स्तर प्राथमिक है। गाँवों में जहाँ पूर्व प्राथमिक केन्द्र काम कर रहे हैं, वहाँ सभी लड़कियाँ माध्यमिक स्तर तक पढ़ी हैं तथा हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट तक पढ़ी हुई लड़कियाँ भी काफी संख्या में हैं। कुछ लड़कियों ने शिक्षिका के रूप में कार्य करते हुए बी0 ए0 एवं एम0 ए0 तक शिक्षा पूरी की है। यह जरूरी नहीं है कि गाँव की समृद्ध तथा शिक्षित महिला ही परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हो, बल्कि इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या शिक्षित महिला ही अच्छा नेतृत्व कर सकती है, गाँव की प्रौढ़ महिलाएं, जो यहाँ की स्थाई निवासी हैं, खेती करती हैं, परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्याएं हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर विकास कार्यक्रमों को थोपती नहीं बल्कि उन्हें बालवाड़ी शिक्षिकाओं, पुरूषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से सम्बन्धित महिलाओं से प्रत्यक्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् केवल उन्हीं कामों को महत्व दे, जो ग्रामीण/स्थानीय महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरूष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं खुलकर गोष्ठियों में सामने आते हैं, जो परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की दिशा में एक अनौपचारिक एवं महत्वपूर्ण प्राथमिक कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में नर्सरी लगाना, चारा उत्पादन, घेराबंदी करना, खाद बनाना, रोकबाँध बनाना तथा जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण तथा प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित हैं। इसके अलावा पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, पॉलीथीन की टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टैंक और हैंडपम्प आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षा व जागरूकता लाने के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालायें तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में लगभग बाइस महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते है। साथ ही, महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

जून 2014 में सम्पन्न हुए पंचायतीराज चुनाव में उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हुए 526 लोग (379 महिलाएं) ग्राम–प्रधान, पंच, क्षेत्र एवं जिला पंचायत सदस्य चुने गये हैं। इसमें बारह महिलाएं क्षेत्र पंचायत सदस्य बनी हैं। महिला संगठनों की अध्यक्षा रह चुकी दो महिलाएं जिला पंचायत सदस्य चुनी गई हैं।

संगठन की सदस्याएं उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग कर रही हैं। विभिन्न कार्यक्रम जो कि ग्रामीण विकास, महिला विकास, शिक्षा, खनन, कृषि, जंगल, पानी, आयवृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए बनाये गये हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव है। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने विकास के मुद्दे पर अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों में बदलाव व सुधार की माँग करती हैं।